LIBRARY

ग्रामसेवक

सामुदायिक विकास-योजना प्रशासन द्वारा प्रकाशित 'ग्रामसेवक' मासिक पत्र का हिन्दी संस्करण ग्रामवासियों के उपयोगार्थ निकाला गया है जिससे कि ग्राम-सुधार को विभिन्न योजनाओं के बारे में ग्रामीण जनता को सामयिक सूचना और समाचार मिलते रहें। भाषा अति सरल और छपाई सुन्दर।

वार्षिक मूल्य १।) : एक प्रति =)

बाल भारती

नन्हें मुन्नों की सचित्र मासिक पत्रिका जिसमें सरल भाषा में मनोरंजक कहानियाँ, शिक्षाप्रद कविताएँ, उपयोगी लेख और रेखाचित्र प्रस्तुत किए जाते हैं।

वार्षिक मूल्य ४) : एक प्रति ।=)

कुरुक्षेत्र

सचित्र मासिक पत्र जिसमें देश के सामुदायिक विकास कार्यक्रम-सम्बन्धी समाचार तथा लेख प्रकाशित होते हैं। वार्षिक मूल्य २।।) : एक प्रति ।)

प्रसारिका

(सचित्र त्रैमासिक)

'प्रसारिका' (रेडियो संग्रह) आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित उच्च कोटि की चुनी हुई वार्ताओं, कविताओं तथा कहानियों आदि का त्रैमासिक संग्रह है। सुन्दर गेट-अप की इस सचित्र पत्रिका का मूल्य ८ आना है। वार्षिक मूल्य २)

आजकल

हिन्दी के इस सर्वप्रिय सचित्र मासिक पत्र में भारत भर के प्रसिद्ध साहित्यकारों के विचारपूर्ण लेख, कविताएँ तथा कहानियाँ पढ़िए। साथ ही 'आजकल' में भारतीय कला व संस्कृति के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर प्रामाणिक लेख प्रकाशित किए जाते हैं।
वार्षिक मूल्य ६) : एक प्रति ।।)

पब्लिकेशन्स डिवीज़न,

ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली-८

कुरुक्षेत्र

सामुदायिक विकास मन्त्रालय का मासिक मुखपत्र

वर्ष २] नवम्बर १९५६ [अंक १

विषय-सूची

आवरण चित्र [कलाकार : आर० शारंगन्]		
तीन महत्वपूर्ण बातें	श्रीमन्नारायण	२
सर्वोदय क्या है ?	विनोबा भावे	३
सामुदायिक विकास कार्यक्रम के चार वर्ष	...	४
मेला रामदेवरा	यशोदेव शर्मा	६
भारत के बच्चे	मेरी क्लबवाला जादव	१०
भारत (नवम्बर १९५६)	...	१२
ग्राम सेवक तेरे अनेक नाम !	एम० एम० फडस	१४
चित्रावली	...	१५-१८
ज़मीन में जल की खोज	सूर्यनारायण व्यास	१९
श्रमदान मेला	रामप्रकाश श्रीवास्तव	२०
स्त्रियों और बच्चों को सुखी बनाने का प्रयास	...	२१
विकास योजना सांभर के तीन वर्ष	...	२४
परिवर्तन [एक वार्तालाप]	चन्द्रकान्ती मिश्र	२६
ग्राम पंचायतें और वन महोत्सव	माताबदल चौरासिया	२८
प्रगति के पथ पर	...	३०

सम्पादक :

केशवगोपाल निगम

[सहकारी सम्पादक, प्रकाशन विभाग]

उप-सम्पादक : *मनोहर जुनेजा*

मुख्य कार्यालय
ओल्ड सेक्रेटेरिएट,
दिल्ली—८

वार्षिक चन्दा २॥)
एक प्रति का मूल्य ।)

विज्ञापन के लिए
बिजनेस मैनेजर, पब्लिकेशन्स डिवीजन
दिल्ली—८ को लिखें

तीन महत्वपूर्ण बातें

श्रीमन्नारायण

पिछले तीन-चार साल से भारत सरकार सामुदायिक विकास कार्यक्रम को बहुत महत्व दे रही है। सामुदायिक विकास कार्यक्रम को तेज़ रफतार से आगे बढ़ाने के उद्देश्य से सरकार ने एक अलग मन्त्रालय खोल दिया है। सामुदायिक विकास कार्यक्रम पर दूसरी पंचवर्षीय योजना में २०० करोड़ रुपए खर्च करने की व्यवस्था है। आने वाले पाँच वर्षों में सारे देश में सामुदायिक विकास-योजनाओं और राष्ट्रीय सेवा सेवाओं का जाल बिछा दिया जाएगा।

कुछ बातें ऐसी हैं जिनकी तरफ मैं सामुदायिक विकास कार्यकर्ताओं का ध्यान आकर्षित कराना चाहूंगा। पहले तो यह समझ लेना ज़रूरी है कि समाज का विकास स्वयं समाज द्वारा ही हो सकता है, हालाँकि सरकार से सहायता मिलेगी। आरम्भ में सामुदायिक विकास कार्यक्रम और राष्ट्रीय विस्तार सेवा कार्यक्रम का श्रीगणेश स्वयं सरकार को करना पड़ा और यह स्वाभाविक ही था। जनता ने सरकारी योजना में सहयोग दिया। यह बात हरेक व्यक्ति को माननी पड़ेगी कि जनता का सहयोग सन्तोषजनक था। अगर कुछ त्रुटियाँ सामने आईं तो उनका कारण शासन-प्रणाली में लचकीलेपन का अभाव था। परन्तु लोगों ने नकदी, सामान और श्रमदान के रूप में पूरा सहयोग दिया। अब हम जो कार्य शुरू करते हैं वे जनता के होते हैं और स्वयं जनता द्वारा किए जाते हैं—सरकार जनता के कार्यों में सहयोग देती है। दूसरे शब्दों में अब स्वयं जनता का समाज अपना कार्यक्रम आपसी सहयोग और स्वःसहायता से चलाता है। सरकार को प्रशासन की रुकावटों को हटाकर तथा रुपए का प्रबन्ध करके समाज की सहायता करनी चाहिए ताकि लोगों के परिश्रम का फल उन्हें जल्दी से जल्दी मिले। अतः सामुदायिक विकास कार्यक्रम जनता द्वारा शुरू किया जाए न कि सरकार उन पर थोपे।

दूसरी बात जिसका हमें ध्यान रखना चाहिए वह है गाँव की संस्थाओं और परम्पराओं का सम्मान। उदाहरण के लिए ग्राम पंचायतों को ही लीजिए। ग्राम पंचायतें चिर-स्मरणीय काल से हमारे देश में हैं। यह आवश्यक है कि सामुदायिक विकास कार्यक्रम बनाते समय इन पंचायतों से अच्छी तरह सलाह मशविरा कर लिया जाए। भारत जैसे विशाल देश में अकेले केन्द्र के बूते पर कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती। हमारी आर्थिक और सामाजिक योजनाएँ तभी सफल हो सकती हैं जब इन्हें पंचायतों जैसी स्थानीय संस्थाओं को सौंप दिया जाए। इसके अतिरिक्त सामुदायिक विकास अधिकारियों को स्थानीय रीति-रिवाजों को ध्यान में रखकर ही काम करना चाहिए। एक उदाहरण लीजिए—अगर मुझे किसी गाँव में एक बुनियादी स्कूल के उद्घाटन की व्यवस्था करनी है तो मैं कैंची से फीता काटने का आयोजन नहीं करूँगा। उद्घाटन करने की यह प्रणाली भारतीय नहीं है और न ही गाँवों में प्रचलित है। मैं गाँव में भजन कीर्तन का आयोजन करूँगा जिसके बाद गाँव के किसी नेता से उस स्कूल का दरवाज़ा खोलने की प्रार्थना करूँगा। इसी तरह मैं किसी ऐसी बड़ी चाय-पार्टी का आयोजन नहीं करूँगा, जिसमें शहरों अथवा विदेशों में बने हुए प्याले और प्लेटों को इस्तेमाल किया गया हो। ज़रूरत पड़ने पर मैं ऐसे जलपान की व्यवस्था करूँगा जो गाँव में ही तैयार किया गया हो और गाँव में तैयार किए हुए बर्तनों में ही लोगों को दिया जाए। यह सब बातें छोटी अवश्य दिखाई पड़ती हैं लेकिन मेरे ख्याल में अगर हम चाहते हैं कि हमारा सामुदायिक कार्यक्रम जनता शुरू करे, तो हमें इन छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देना होगा। गाँव वाला यह महसूस करने लगे कि हम उसकी संस्थाओं, उसके रीति-रिवाजों का सम्मान करते हैं और अपनी इच्छा से कोई शहरी चीज़ उस पर नहीं थोप रहे।

तीसरी बात यह है कि ग्राम सेवक किसी बड़प्पन की भावना को लेकर लोगों के पास न जाएँ—नम्रता और सेवा भावना लेकर ही हमें उनके पास जाना चाहिए। हालाँकि हमें गाँववालों को कई नई बातें बतानी हैं लेकिन हम भी उनसे काफ़ी कुछ सीख सकते हैं। हमारे ग्रामवासी बहुत अच्छे हैं और हम उन पर गर्व कर सकते हैं। हमें उनके पास साथी और सहयोगी बनकर जाना चाहिए। सेवा के सम्बन्ध में हमारे विचारों में भी परिवर्तन होना चाहिए। अब हम लोग यह समझते हैं कि जो सेवा करता है, वह बड़ा है, जो सेवा करवाता है, वह छोटा है।

इस लिए सेवा के स्थान पर हमें विभिन्न वर्गों के सहयोग पर जोर देना चाहिए। वास्तविक जनतन्त्र के साथ यह चीज़ काफी मेल खाती है।

मुझे विश्वास है कि आनेवाले पाँच वर्षों में जनता और सरकार के सहयोग और प्रयत्नों के फलस्वरूप हमारा सामुदायिक विकास कार्यक्रम काफी प्रगति करेगा। अगर ऊपरी बातों को निरन्तर ध्यान में रखा गया तो देश हर दिशा में तीव्र गति से आगे बढ़ेगा।

सर्वोदय क्या है ?

विनोबा भावे

गान्धी जी ने स्वराज्य के बाद हमें एक नया मन्त्र दिया। उस नए मन्त्र का नाम है—'सर्वोदय'। यह कोई नई चीज़ नहीं और न नया मन्त्र ही है, यह तो पुराना ही मन्त्र है। ऋषियों ने कहा था—'सर्वभूतहिते रताः।' हम सबका उदय चाहते हैं। हमें सबके लिए काम करना चाहिए।

अब इस वैज्ञानिक युग में लोग नए ढंग से सोचने लगे हैं। नए-नए विचार सामने रखते हैं। पुराने शब्दों को नया अर्थ देते हैं, जिससे कभी-कभी अनर्थ हो जाता है, क्योंकि विज्ञान अभी अपूर्ण है। अपूर्ण विज्ञान से अपूर्ण मन्त्र दुनिया के सामने रखे गए हैं। पाश्चात्यों का जो विज्ञान चल रहा है, वह अधूरा है। उसने एक नया विचार दिया है और वह है—'अधिक-से-अधिक लोगों का अधिक-से-अधिक भला' (ग्रेटेस्ट गुड आफ दि ग्रेटेस्ट नम्बर)। यह एक खतरनाक शब्द निकला है। विज्ञान के युग में यह जो शब्द मिला, उसकी चमक-दमक में भेदासुर का निर्माण हुआ। कम संख्या और अधिक संख्या में से संख्यासुर भी निकला। जबसे हम इस 'मेजारिटी, माइनारेटी' (बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक) की बहस में पड़े, तभी से इस अधूरे मन्त्र के कारण दुनिया के हर देश में झगड़े चले। लेकिन इस अधूरे मन्त्र के कारण ये विचार भी एकांगी हो गए। इसकी पूर्ति तो आत्मज्ञान के दर्शन से ही हो सकती है। पूर्ण विचार तो यह है कि सबका भला होना चाहिए, अधिक-से-अधिक लोगों का नहीं। क्योंकि इसमें जो संख्या में कम हैं, उनपर अन्याय होता है। हम परिवार में ऐसा कभी नहीं सोचते कि परिवार के नौ मनुष्यों का भला हो और एक का न हो। पर समाज का सवाल आते ही विज्ञान ने कहा कि 'अधिक-से-अधिक लोगों का अधिक-से-अधिक भला होना चाहिए।' पर हम तो सबका भला चाहते हैं। विज्ञान अपूर्ण मन्त्र है और सर्वोदय पूर्ण मन्त्र है। सर्वोदय आत्मा का विचार है। उसका अभ्युदय आत्मा के ज्ञान में है। यह पूर्ण, सही और शुद्ध है। 'बीस के विरुद्ध पचीस' ऐसी राय को हम गलत मानते हैं। आत्मा के टुकड़े नहीं हो सकते लेकिन हमने तो आज आत्मा के टुकड़े कर ही डाले हैं। वास्तव में आत्मा एक अविभाज्य, पूर्ण, समान, निर्दोष और हर एक प्राणी में समान रूप से विद्यमान है।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम के चार वर्ष

[२ अक्तूबर को हमारे कार्यक्रम के चार वर्ष पूरे हो गए और हमने अपने पांचवें वर्ष में कदम रखा । अपने जीवन के इन चार वर्षों में हमारे कार्यक्रम ने जो सफलताएं प्राप्त की हैं, उनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत लेख में देने का प्रयत्न किया गया है —सम्पादक]

सामुदायिक विकास कार्यक्रम अपने जीवन के पांचवें वर्ष में प्रवेश कर चुका है । २ अक्तूबर, १९५२ को यह सब से पहले लगभग ५५ योजना-क्षेत्रों में शुरू किया गया था । आज, देश के साढ़े पांच लाख गाँवों के एक-चौथाई से भी अधिक गाँव इस कार्यक्रम से लाभ उठा रहे हैं । हर तीन में से एक गाँव वाला इसको क्रियान्वित करने में योग दे रहा है और इससे लाभ उठा रहा है ।

अगर कार्यक्रम की सफलताओं और उसमें लोगों के सहयोग को कसौटी माना जाय तो इस कार्यक्रम को सही अर्थ में ऐसा जन-कार्यक्रम कहा जा सकता है जिसमें सरकार ने भी हाथ बटाया । लोगों ने नकद धन, वस्तुओं तथा श्रम के रूप में जो सहायता दी वह २६ करोड़ १३ लाख रु० के बराबर है । इसके मुकाबले, सरकार ने ४६ करोड़ २ लाख रु० लगाया । मार्च १९५६ तक इस कार्यक्रम पर कुल ७२ करोड़ १५ लाख रु० खर्च हुआ । इसका अर्थ यह हुआ कि सरकार का जितना खर्च हुआ, उसके लगभग आधे के बराबर सहायता लोगों ने दी ।

इस समय देश में जो ५५७ सामुदायिक विकास खण्ड और ६०३ राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्ड हैं, उनसे ८ करोड़ ८८ लाख जनसंख्या वाले १,५७,३४७ गाँवों को लाभ पहुँच रहा है । २ अक्तूबर, १९५६ को ३११ और राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्डों में काम शुरू किया गया । इनका लाभ लगभग २ करोड़ जनसंख्या वाले करीब ३१,००० गाँवों को पहुँचेगा ।

जिन योजनाओं तथा विकास खण्डों में चार वर्ष पहले कार्यक्रम शुरू किया गया था, उनमें भरपूर विकास का कार्य पूरा हो चुका है । इस अवधि में, ३२८ राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्डों को भरपूर विकास कार्य के लिए सामुदायिक विकास खण्डों में परिवर्तित किया गया । पिछले मास ६४ और राष्ट्रीय विस्तार सेवा खंडों को भी इसी तरह सामुदायिक विकास खंडों में परिवर्तित किया गया ।

हमारे देहातों की समृद्धि बहुत कुछ कृषि पर निर्भर है । इसलिए, इस कार्यक्रम में शुरू से ही सर्वोच्च प्राथमिकता कृषि को दी गई । इसके अन्तर्गत, किसानों को अच्छे औज़ारों का उपयोग करने, खेती के उन्नत तरीके अपनाने और खेतों में बढ़िया खाद और उर्वरक डालकर उन्हें उपजाऊ बनाने के लाभ समझाए गए ।

मार्च १९५६ तक ९१,५९,००० मन उर्वरक और ४८,२६,००० मन अच्छे बीज बांटे गए, खेती के अच्छे तरीकों के १२,८२,००० प्रदर्शन किए गए, और २० लाख एकड़ से भी ज़्यादा अतिरिक्त भूमि की सिंचाई की गई । जगह-जगह पर जो सर्वे किए गए, उनसे ज्ञात होता है कि सामुदायिक विकास क्षेत्रों में खास-खास फसलों की उपज में अन्य क्षेत्रों के मुकाबले २० से २५ प्रतिशत तक वृद्धि हुई है ।

अनुमान है कि इस अवधि में ११ लाख एकड़ ज़मीन का सुधार किया गया और उसमें खेती करने से देश में अनाज की उपज में लगभग ७५ लाख मन की बढ़ती हुई है ।

इसके अलावा, १,५७,००० एकड़ ज़मीन में फलों के वृक्ष लगाए गए और ३,८८,००० एकड़ में तरकारियाँ उपजाई गईं ।

पशुओं की नस्ल सुधारने के लिए मार्च, १९५६ तक २,५६३ मुख्य ग्रामकेन्द्र खोले गए और अच्छी नस्ल के १२,८२४ पशु तैयार किए गए । कृष्णा नदी के दक्षिण में, सामुदायिक विकास क्षेत्रों में पशुओं की खूनी दस्तों की बीमारी को रोकने की एक योजना शुरू की गई ।

मुर्गी-पालन को प्रोत्साहन देने के लिए अच्छी नस्ल के करीब २,४५,००० मुर्गे और मुर्गियाँ दी गईं ।

देहातों में मुर्गी-पालन सम्बन्धी ३० प्रदर्शन-केन्द्र और ३० विकास-खण्ड खोले गए ।

देश के भीतरी भागों में मछली-पालन-क्षेत्रों का विकास करने के लिए उपयुक्त स्थानों के जलाशयों में अच्छी किस्म की छोटी मछलियाँ बढ़ाई गईं और उनका पालन किया गया ।

सड़कों के निर्माण के कार्य में लोगों ने बड़े उत्साह से हाथ बटाया । मार्च १९५६ के अन्त तक ३८,००० मील कच्ची सड़कें और ६०,२९ मील पक्की सड़कें बनायी गयीं और २२,००० मील मौजूदा सड़कों का सुधार किया गया ।

इस अवधि में चिकित्सा तथा स्वास्थ्य सेवाओं का भी काफ़ी विकास हुआ । ६७४ प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्र और ५७८ मातृत्व तथा शिशु-कल्याण केन्द्र खोले जा चुके हैं । पीने के अच्छे पानी की व्यवस्था करने की योजना के अन्तर्गत १,०७,००० कुएँ बनाए गए या मरम्मत करके ठीक किए गए । ६४ लाख गज़ नालियाँ बनाई गईं । मार्च १९५६ तक देहातों में २९,००० नये और ३,३०२ आदर्श मकान बनाये गये । इसके अलावा ४९,००० मकानों का सुधार किया गया ।

गाँवों में शिक्षा-सुविधाएं बढ़ाने के विचार से लगभग १५,००० नए स्कूल खोले गए और ६,९६८ साधारण स्कूलों को बुनियादी स्कूलों में बदला गया । ४१,००० समाज शिक्षा केन्द्र खोले गए और ९,९६,००० वयस्कों को साक्षर बनाया गया । आलोच्य अवधि में सामुदायिक मनोरंजन-केन्द्रों और पुस्तकालयों की संख्या ६९,००० और सूचना-केन्द्रों को संख्या ७६३ हो गई । एक उल्लेखनीय बात यह हुई कि लोगों ने युवक क्लब, महिला समाज, कृषक संगठन आदि कई तरह के संगठन बनाए, जिनकी संख्या अब लगभग ७६,००० है ।

कार्यक्रम की सफलता इस बात पर निर्भर होगी कि लोग खुद किस हद तक अपने विकास कार्य का आयोजन करते हैं और उसे क्रियान्वित करते हैं । अतः इसी तथ्य को ध्यान में रखकर ११,५४० से भी अधिक पंचायतें और २४,८२९ ग्राम-परिषद, विकास मण्डल आदि खोले गए हैं । करीब ४१,००० ग्राम-नेताओं को प्रशिक्षण दिया गया है । इस अवधि में लगभग ३३,००० नई सहकारी संस्थाएं बनी हैं, जिनके १७ लाख सदस्य हैं ।

सामुदायिक विकास क्षेत्रों में स्त्रियों और बच्चों के कल्याण की ओर भी पूरा ध्यान दिया जा रहा है । इस सम्बन्ध में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद और चिखली खण्डों में प्रारम्भिक योजनाएं शुरू की गई हैं ।

कार्यक्रम को कियान्वित करने के लिए ऐसे कर्मचारियों की आवश्यकता होती है, जो उत्साही हों, नए दृष्टिकोण वाले हों और अपने विविध कार्य कर पाने के लिए ठीक से प्रशिक्षित हों । प्रशिक्षण के लिए खोले गए ४८ विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों में इस वर्ष के मध्य तक १४,४४६ ग्राम सेवकों और ६,३१४ अन्य कर्मचारियों को काम सिखाया गया । खण्ड विकास अधिकारियों को प्रशिक्षण देने वाले ३ केन्द्रों में १.००० से अधिक अफसरों को प्रशिक्षण दिया गया । १,७१० समाज शिक्षा संगठनकर्ताओं को भी काम सिखाया गया । इन्दौर की कस्तूरबा ग्राम सेविकाशाला, अमरावती की शिवाजी शिक्षा संस्था और विस्तार प्रशिक्षण केन्द्रों को २२ गृहविज्ञान शाखाओं में ग्राम सेविकाओं को काम सिखाया जा रहा है। रिज़र्व बैंक के सहयोग से खाद्य एवं कृषि मंत्रालय ने अपने आठ केन्द्रों में ३९ विस्तार अधिकारियों को सहकारिता सम्बन्धी काम सिखाया है । वाणिज्य तथा उपभोक्ता उद्योग मंत्रालय ने उद्योगों के विषय में ६३ विस्तार अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया है । समय-समय पर गोष्ठियाँ करना और अध्ययन-यात्राएं करना प्रशिक्षण-कार्यक्रम का ही एक अंग है ।

अनुमान है कि दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक इस कार्यक्रम से लगभग ३ लाख लोगों को काम मिलेगा । इस समय इसमें लगभग ८४,००० व्यक्ति लगे हुए हैं ।

इसके अलावा, विकास कार्य बढ़ने से अप्रत्यक्ष रूप से बहुत लोगों को काम मिलता है । अनुमान है कि ४,०१,००० व्यक्तियों को थोड़े समय का और ५६,००० व्यक्तियों को पूरे समय का अतिरिक्त काम मिला है । गाँवों के ५२,५३,००० परिवार सामुदायिक विकास कार्यक्रम का फायदा उठा रहे हैं ।

दूसरी योजना की अवधि में सामुदायिक विकास क्षेत्रों में घरेलू तथा छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन मिलने से तीन गुने अधिक लोगों को काम मिलने की सम्भावना है । इस उद्देश्य से २६ प्रारम्भिक योजनाएं शुरू की गई हैं ।

भारत को सामुदायिक विकास कार्यक्रम में जो सफलता मिली है, उसके कारण बहुत से देशों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है । बर्मा, श्रीलंका, अफ़गानिस्तान, मिस्र और फिलीपीन को मिलाकर करीब एक दर्जन देशों ने भारत के सामुदायिक विकास कार्यक्रम की कार्य-प्रणाली तथा अनुभवों को जानने के लिए अपने अधिकारियों के अध्ययन-दल भेजे । मध्यपूर्व के छः देशों के कुछ अधिकारी

[शेष पृष्ठ ९ पर]

मेला रामदेवरा

यशोदेव शर्मा

रात को जोधपुर से चलकर सवेरे तड़के ही जब गाड़ी पोकरण के स्टेशन पर रुकी, तो डिब्बे से उतरते ही राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्ड सांकड़ा के हँसमुख विकास अधिकारी और उनके सहयोगियों ने आ घेरा। स्टेशन से बाहर निकले। सामने एक और सज्जन जो रात उसी डिब्बे में थे किसी की बाट जोह रहे थे। हम लोग उनके पास पहुँचे। परस्पर परिचय प्राप्त किया। ज्ञात हुआ कि उनकी और मेरी एक ही मंज़िल थी। वह थे डा० सीसोदिया जो जोधपुर के महात्मा गान्धी अस्पताल से मेले का प्रबन्ध करने ही आए थे। स्टेशन के बाहर सब सुनसान था। बचपन ही से 'मेले' शब्द को सुनते ही मेरे दिमाग़ में रंगीन गुब्बारों, खिलौनों, पू पू करके बजने वाले बाजों, सपेरे के तमाशों, रीछ के करतब और जादू के हैरत-अंगेज़ करिश्मों, "बारह मन की धोबन देखो, और बम्बई का बाज़ार" कह कह कर एक-एक पैसे में टीन को अद्भुत मशीन में घंटी बजा-बजा कर सिनेमा दिखाने वालों, हल्ला-हुड़दंग का चित्र उतर आता है। मैंने आगरे के समीप कैलाश के, कैला देवी के, करौली के और हर सोमवार को लगने वाले शिव जी के शहरी मेले देखे थे। यहाँ ये सब कुछ न पा थोड़ा आश्चर्य ज़रूर हुआ। साथियों से सहमे-सहमे पूछ ही तो लिया--"भाई पुरोहित! यह तो बताओ कि मेला कहाँ लगेगा ?" जिज्ञासा यह जानकर शान्त हुई कि वह स्थान, रामदेवरा तो पोकरण से सात मील दूर है।

दोपहर के भोजन के उपरान्त कुछ विश्राम के बाद जब तीसरे पहर जीप में अन्य साथियों और डाक्टर सीसोदिया के साथ जो रात भर तो पड़े सोते रहे और जिन से इन चन्द घंटों में काफी मित्रता पैदा हो गई थी, मेले को रवाना हुए तो सच मानिये बचपन की वही भावुकता, वही मेलाखर्ची वाली बात और गुब्बारा, रेलगाड़ी, मोटर इत्यादि खरीद कर लाने के मन्सूबे बनाना बरबस को याद आ गया।

रास्ते में चारों तरफ वीरानी ही वीरानी थी। ऐसी वीरानी जहाँ न पेड़ था, न घास, धूप ही धूप। चारों ओर कड़कती धूप! दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे, जिधर देखिए धूप ही धूप। धूप और धूल! नीचे ज़मीन पर धूल ही धूल थी, पत्थर, पहाड़, पहाड़ी सब नदारद। यहाँ तक कि रेत के कारण जीप के पहिये भी इधर-उधर हो रहे थे, डगमगा से रहे थे। तभी ख्याल आया कि यह क्षेत्र राजस्थान के मरुस्थल में स्थित है। राजकीय जीवन के ये दस वर्ष, हरे ही हरे में काटे थे--उदयपुर, राजसमन्द के पक्के तालाबों, डूंगरपुर के घने जंगलों, और कुम्भलगढ़ के उस क्षेत्र में जहाँ सीताफल जंगली रूप से उगता है, उगाया नहीं जाता, जहाँ शहद मनों में पैदा होता है, आम के पेड़ों के वन हैं, ढाक के जंगल हैं। बचपन से सुनता आ रहा था राजस्थान के रेतीले मैदानों, टीबों की बातें, गानों में भी "मरूधर, म्हारो देस, राजाजी, मरूधर म्हारो देस," सुना था। पर देखने को आज मिल रहा था। ऊपर तेज़ सूर्य की प्रचण्ड, देदीप्यमान रश्मियाँ, नीचे रेत, बालू। जहाँ तक निगाह जाती थी बालू ही बालू। कोई साफ रास्ता नहीं, जिधर से आप चले जाएँ वही रास्ता था। धीरे-धीरे मार्ग के दांई ओर एक तालाब का पानी दिखा, कुछ मंदिर के कलश, पक्के मकान, धुआँ-सा उठता हुआ। शोर-गुल सुनाई पड़ा। अभी तक उस स्थल का विस्तृत आकार सामने नहीं आया था। यकायक जब सड़क के दोनों तरफ ५०-६० मोटर बसें दिखीं और पुलिस के बावरदी सिपाही की सीटी सुनी, तो मालूम हुआ कि मेला आ गया। सामने एक चौड़े मैदान में बैलगाड़ियाँ खड़ी थीं, उनके नीचे लोग जैसे-तैसे तिरपाल, धोतियाँ और खद्दर की खोलें तान-तान कर छाँह बना बड़े आराम से बैठे हुए थे। एक ओर ध्वनि विस्तार यंत्र (लाउड-स्पीकर) घोषणा कर रहा था--"भाइयो! एक बच्चा जो अपना नाम.........बताता है, सफ़ेद खद्दर का कुरता पहने हुए, जिसके गले में चांदी का एक कन्दोरा है इत्यादि।' दूसरी ओर एक कथावाचक गला फाड़ फाड़ कर, अपने श्रोताओं को लुभाने और रामदेव जी के गुणगान के साथ ही साथ अपने द्वारा किए गए प्रशंसात्मक जल-प्रबन्ध में दिल खोल कर चन्दा देने की दुहाई दे रहा था। "मनी बाई धरमपुर वाली का एक रुपया" "बोल रामदेव बाबा की जय"--सुनाई दिया। दूसरी ओर के एक भौंपू से आवाज़ आ रही थी, हालाँकि थी ज़रा भर्राई हुई, फटे बाँस की सी--"खम्मां खम्मां ऐ कंवर अजमाल का ऐ, खम्मां खम्मां।" एक ओर साफ मैदान में ५-६ तम्बू कतार में करीने से खड़े दिखाई दिए। ज्ञात हुआ ये जन स्वास्थ्य विभाग के अग्रिम आने वाले अधिकारियों, मेला अस्पताल के व्यवस्थापकों के और अन्य स्थानीय अफसरों के थे। दूसरी ओर कुछ नए-नए से तम्बू लगे हुए थे। बाहर

संगीन पहरा था। मेरे योग्य सेवा की तख्ती का अभाव, पुलिस स्टेशन रामदेवरा वाली तख्ती पूरा कर रही थी। मेले का बाज़ार भी देखा। बीच में मुश्किल से २० फुट स्थान छोड़ कर, दुकानें लगी हुई थीं जिनमें अधिकतर शुद्ध देसी घी की पूड़ी, साग, बीकानेर के भुजिये ही की होंगी। एक साथ चार फोटोग्राफर्स स्टाल जिनमें अजीब-अजीब किस्म के परदे लटके हुए, नकली तमंचा, टेढ़े-मेढ़े हैट, दो चार टीन की फोल्डिंग कुर्सियां और तिपाई पर रखे कैमरा को देख ख्याल आया कि क्या वास्तव में इस मेले में आने वालों में इनकी इतनी अधिक मांग है। एक स्टॉल पर एक सरदार जी साफा बांधे, ठीक पंजाबी लहजे में दुस्से, दुसूती, दरी, चादरें बेच रहे थे। आगे चले। यह लीजिए, जोधपुर के प्रसिद्ध बनारसी पान वाले की दुकान आ गई। इस पर चमकते शीशे लगे थे। करीने से सजाई हुई कैप्सटेन, रैड एन्ड व्हाइट, सीज़र्स, ऐलीफैंट छाप सिगरेटें और पहलवान छाप बीड़ियों के बंडल। इसके पास ज़रा रास्ता छोड़कर और बड़े कि भड़भूंजा था जो सामने खिले हुए भुने चनों का ढेर बखेरे इलायची दाने बेच रहा था। "बाबा का प्रसाद लेते जाओ," "कोढ़ियों को चने" की आवाज़ दे रहा था। उसी के पास एक दुकान वाला नारियल के ढेर लिए बैठा था। एक और दुकान जो आकर्षक दिखी, चूड़ी वाले की थी। लाल, पीली, मोटी-मोटी चूड़ियाँ, लाख के चूड़े और रांग के आभूषण, कातरे, कड़ूले हाथों के, पैरों के, बिछुए थे। सोहाग की निशानी, बोरले थे। उसी दुकान पर ऊंट के काले बालों से बटी हुई मोटी-मोटी चोटियाँ भी नज़र आईं। छोटे-छोटे चार पैसे के शीशे, हींगलू को शीशियाँ, गहरे लाल रंग की नेल पोलिश और दो चार सस्ती किस्म के पाउडर के डिब्बे, "गोदरेज" के वतनी साबुन और "लक्स" की टिक्की वहाँ देखकर ख्याल हुआ कि क्या इन सब आधुनिक प्रसाधनों ने इतने अन्दर तक गाँवों में प्रवेश कर लिया है अथवा इस चलते-फिरते फैन्सी स्टोर के ये आवश्यक अंग हैं।

इसके पश्चात, हम लोग देवदर्शन के लिये मन्दिर की ओर मुड़े। दोनों ओर दुकानों के बीच से होकर एक तंग मार्ग गया था। उसे दुकानदारों ने दुकानों के आगे तख्ते लगाकर, बैंचें, कुर्सियाँ और गन्दी मेज़ें डाल कर और भी तंग बना डाला था। आगे बढ़ने पर लाल पत्थरों का बना एक प्रशस्त द्वार दिखाई दिया जो अपनी प्राचीनता का परिचय दे रहा था। द्वार के एक ओर 'रामदेव कुष्ठ निवारण संघ' का कार्यालय, औषधालय, था और दूसरी ओर एक स्थानीय राजनीतिक संस्था का दफ्तर। विकास खण्ड की ओर से दरवाज़े की प्रमुख दीवारों पर दो लेख-पट्ट बना उन पर खण्ड की आधार सूचनाएँ, प्रगति और भविष्य के लक्ष्य दिखाए गए थे। यह एक नवीन प्रयोग था जो बड़ा लोकप्रिय सिद्ध हुआ। मन्दिर के प्रवेश माग के दोनों ओर सैंकड़ों कोढ़ी भीख माँगने के लिए बैठे रहते हैं। अपने सामने गन्दे कपड़े फैलाए रहते हैं जिन पर यात्री एक-दो पैसा अथवा मुट्ठी भर चने डाल जाते हैं। कोढ़ियों में से अधिकतर ने आनेवाले के हृदय को द्रवित करने के लिए ही अपने ग्रसित अंगों को खोल रखा था जिन पर मक्खियाँ भिनकती देखकर दया के साथ-साथ घृणा भी उत्पन्न होती थी। मन्दिर के सामने के चौड़े पक्के चौक को पार कर प्रांगण में पहुँचे। छोटी-छोटी ६-७ सीढ़ियों को पार करके मुख्य मन्दिर में प्रवेश किया। भीतर से मन्दिर बड़ा सुन्दर बना हुआ है। पत्थर का पक्का फर्श है। रामदेव बाबा और उनकी शिष्या डालीबाई की समाधियों पर संगमरमर के कबरनुमा प्रतीक बने हुए हैं। चारों तरफ मोटे पीतल के चमकते हुए लट्ठों का अहाता खिंचा हुआ है, कहा जाता है पीछे की ओर बाबा के वंशजों की कब्रें हैं। मन्दिर में हवनकुंड में डाले गए खोपरे के धुएँ से दम घुटने लगा तो बाहर निकले। इस मन्दिर को देखकर एक अन्य सामुदायिक विकास खण्ड स्थित भारत प्रसिद्ध राणकपुर जी जैन मन्दिर की याद आ गई। वहाँ कितनी सफ़ाई, कितनी स्वच्छता थी।

शाम हो चली थी। घूमने-फिरने से जो थकावट महसूस हुई तो चाय की याद आई। शाहपुरा के रहने वाले चिर-परिचित उपज़िलाधीश के खेमे में पहुँचे तो चाय तैयार मिली। थोड़ा आराम किया। इतने में संध्या हो गई। मन्दिर से शंख ध्वनि और घंटा निनाद सुनाई पड़ने लगा। साथ ही साथ, सैंकड़ों यात्री समूहों ने जहाँ-जहाँ भी वे विराजमान थे, तालाब की पाल पर, बीच चौक में, अपने अपने रामदेव बाबा की पूजा-अर्चना प्रारम्भ की। बस, एक देव अनेक रूप साकार हो उठा। अँधेरा बढ़ने लगा। लोगों ने रात्रि विश्राम के लिए अपने-अपने स्थान घेरने शुरू कर दिए।

इसी बीच ऊँची दीवार पर लगे सफ़ेद परदे पर सबका ध्यान एकदम आकृष्ट हुआ। पहले "हैलो हैलो" की आवाज़ और फिर सुमधुर संगीत ध्वनि। सिनेमा प्रारम्भ हो गया। हम लोग भी उस ओर खिंच कर जाए बिना न रह सके। केन्द्रीय सूचना व प्रसार मंत्रालय के पंचवर्षीय योजना प्रसार अधिकारी द्वारा पंचवर्षीय योजना की प्रगति पर एक वृत्तचित्र दिखाया जा रहा था। थोड़ी ही देर में दामोदर घाटी योजना, भाखड़ा नंगल, चितरंजन रेल इंजिन कारखाना, पिम्परी की पैनसिलीन फैक्ट्री, सिंदरी का रासायनिक खाद का कारखाना,

सब सामने चित्रपट पर नज़र आने लगे। लगभग चार-पाँच हज़ार दर्शक मूक, मौन, देखते रहे ।

अब रात के साढ़े नौ बज चुके थे । एक कहावत है "उड़े जहाज़ का पंछो फेर जहाज़ पर आवे ।" क्षुधा ने भी तंग करना शुरू कर दिया था । वापसी पर पोकरण तक के सात मील, सुनसान निर्जन मार्ग होने से बहुत जल्दी ही पार हो गए ।

दूसरे दिन प्रातःकाल पोकरण के छोटे, साफ़, हवादार डाक बंगले के बरामदे में घूमते हुए विचार उठने लगे। इन ग्रामीण मेलों का भारतीय संस्कृति की एकता बनाए रखने में, राष्ट्रीय एकता बनाए रखने में कितना बड़ा हाथ है। कितने सालों से, अतीत से मेले होते चले आ रहे हैं । दूर-दूर के लोग इकट्ठे होते हैं, मिलते हैं, कुछ समय साथ रहते हैं, एक दूसरे से बातचीत करते हैं, अपने-अपने क्षेत्रों से आने वाले किसान, खेतीबाड़ी की बातें पूछते हैं, पानी और फसल की हालत के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। अपनी आवश्यकता की उन वस्तुओं को खरीदते हैं जो साधारणतया उनके गाँवों में नहीं मिलतीं । ऐसे अवसरों का सदुपयोग यदि विस्तार अधिकारियों द्वारा किया जावे तो कितना लाभप्रद हो । ज़रा से प्रयत्न द्वारा स्वतः एकत्रित होने वाले हज़ारों, लाखों, यात्रियों तक वे अपना सन्देश पहुंचा सकेंगे । उनका मित्र, दार्शनिक और मार्ग-प्रदर्शक होना वास्तव में तब ही सार्थक होगा जबकि इस अपार जन-समूह का ध्यान अपनी ओर, अपनी प्रणाली की ओर, पंचवर्षीय योजना की ओर, राष्ट्रीय बचत योजना की ओर आकृष्ट करने में वे समर्थ हो सकें। और मेरे स्वयं के अनुभव से ऐसा प्रतीत होता है यह अधिक कष्ट साध्य न होगा । इस ओर केवल थोड़ा-सा प्रयत्न करने की आवश्यकता है ।

इस वर्ष राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्ड के अधिकारियों ने ज़िला विकास अधिकारी की देखरेख में रामदेवरा मेले को सफल बनाने में प्रशंसनीय प्रयत्न किया था । ज़िला विकास अधिकारी ने अनथक परिश्रम करके छोलदारियों का प्रबन्ध किया क्योंकि इतने बड़े मेले में कहीं धर्मशाला नहीं है । कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ कि प्रदर्शनी लगाई जा सके । खैर, प्रारंभिक कठिनाइयों को पार कर रात-दिन के अथक प्रयत्न का फल दिखाई पड़ा जबकि दूसरे दिन हम लोग तीसरे पहर मेले के मैदान में पहुँचे। एक चार-दीवारी के अहाते को साफ कर खेमे खड़े करके प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था । केवल ५-६ स्टाल ही लगाए जा सके थे, परन्तु वे सब थे चित्ताकर्षक और सुन्दर । अनेक माताएँ बहनें आतीं थीं, देखती थीं, पूछती थीं ये क्या है । प्रसार अधिकारी, ग्राम सेवक व अन्य विभाग के अधिकारी उन्हें बोलचाल की भाषा में समझाते थे । मेले में आए अनेक प्रदेश के अनेक स्त्री-पुरुषों ने प्रदर्शनी को देखा और सराहा। ऐसा मालूम होता था कि वे अनुभव करने लगे हैं कि सरकार अब उनके लिए बहुत कुछ कर रही है । जगह-जगह अस्पताल, स्कूल, पंचायत घर स्थापित करवा रही है । उन्नत किस्म के बीज बांटे जा रहे हैं और सरकार तकावी बांट रही है । भमि सुधार कर रही है, पानी पीने के सोतों को सुधारा जा रहा है । आने जाने के मार्गों को ठीक किया जा रहा है । बालकों के अतिरिक्त प्रौढ़ों को भी पढ़ाने का, सिखाने का प्रयत्न किया जा रहा है ।

इस सारी प्रदर्शनी में सबसे अधिक जिस वस्तु ने ध्यान आकर्षित किया वह थी एक बैठी हुई स्त्री की मूर्ति । यह एक वृक्षारोपण कर रही थी । बिल्कुल सजीव मूर्ति थी । कलाकार थे राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्ड के उत्साही समाज शिक्षा संगठनकर्त्ता । पहनावा ठेठ मारवाड़ी था । माथे में गुँथा हुआ बोर, बँधा हुआ सिर, छींट की ओढ़नी, कलीदार घाघरा, कोहनी के ऊपर से बाजुओं पर और नीचे पहुँचे तक हाथी दाँत के चूड़े, बिन्दी, बारीक काजल, हाथों में मेंहदी सब बिल्कुल एक ग्रामीण नारी का जीता-जागता नमूना था । गोरवाड़ से आई हुई कुछ वृद्धा मातायें तो उसे सचमुच का ही समझ बैठी थीं । जन सम्पर्क कार्यालय द्वारा लगाया गया एक ऐसा स्टॉल था जिसमें जैनरेटर से बिजली के बल्ब जगमगाया करते थे । सब से कम भीड़ रहती थी भेड़ और ऊन उत्पादन के स्टाल पर । कारण स्पष्ट था । जितने चित्र थे, सब आस्ट्रेलियन वेश-भूषा में थे। कुछ राजस्थान की ऊनों के नमूने टँगे जरूर थे परन्तु वे इतने मैले और पुराने हो चले थे कि अनपढ़ गाँव वालों की तो क्या मेरी तक उन्हें देखने की इच्छा न हुई ।

इतने बड़े जनसमुदाय के एकत्रित होने के स्थान पर यात्रियों के ठहरने के लिए किसी सुविधाजनक स्थान का अभाव, यहां आनेवाले को सबसे अधिक खटकता है । दो एक धर्मशालाएँ हैं, परन्तु उनसे समस्या हल नहीं होती । उनकी कोठरियाँ गन्दी हैं, हवादार नहीं हैं, बदबू आती है ।

पीने के लिए साफ़ जल का अभाव रहता है । इतने मनुष्यों के नहाने के लिए एक मात्र साधन है तालाब। इस प्रकार के मेलों में दुर्घटनाएँ भी हुए बिना नहीं रहतीं। इस वर्ष भी बीकानेर से आए एक युवक यात्री ने नहाते समय डूब कर अंतिम साँस ले ही ली । एक सज्जन हैं जो

ट्रक में लोहे की बड़ी-बड़ी टंकियों द्वारा एक दूर के कुएँ से पानी भर-भर कर लाते हैं और मुफ्त देते हैं। इस वर्ष आयोजन के फलस्वरूप उसे क्लोरीन इत्यादि डाल कर साफ़ करने का प्रयत्न किया गया था। परन्तु इसमें और सुधार करने की आवश्यकता है।

दुकानें ज़मीन पर लगाई जाती हैं। यदि एक प्लान बना कर, दाग बोल देकर एक साथ एक वर्ष कुछ रुपया पंचायत द्वारा व्यय किया जाए और पक्के ऊँचे चबूतरे बना दिए जावें और उन पर टीन की चादरें डाल दी जावें तो सुन्दर भी दिखेगा और साथ ही साथ पंचायत को वार्षिक आमदनी भी होने लगेगी। इसी प्रकार पंचायत द्वारा गैस, लैम्पों द्वारा रोशनी का प्रबन्ध किया जाता है। हर वर्ष गैस की बत्तियाँ किराए पर आती हैं। यहाँ तक कि उनको टाँगने के लिए खम्भे भी किराए पर आते हैं। फलस्वरूप बहुत खर्च पड़ता है और फिर भी ठीक प्रबन्ध नहीं हो पाता। सुना था इस वर्ष खम्भे तो विकास अधिकारी के सुझाव पर खरीद लिए गए थे, गैस लैम्प भी खरीद लेने चाहिएँ। स्थानीय पंचायत के पास यदि उपयुक्त धन न हो तो विभाग को प्रयत्न करना चाहिए।

मेले में संक्रामक रोगों की रोक-थाम के लिए आवश्यक प्रबन्ध होना चाहिए, अन्यथा किसी भी समय किसी बड़ी भयंकर कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। इसी प्रकार वहाँ सुना गया कि रामदेव बाबा की विशेष अनुकम्पा कोढ़ियों पर ही रही है। हज़ारों की संख्या में कोढ़ी अब यहाँ भिक्षा माँगने, अपने कोढ़ को मिटाने आते हैं। पर उनकी दयनीय, घिनौनी अवस्था सारे वातावरण को गंदा कर देती है और साथ ही साथ दूसरों को भी यह रोग होने का डर ही बना रहता है। सुना है कि इस वर्ष उनको एक स्थान पर बसाने के लिए एक योजना का श्रीगणेश कर दिया गया है। यह योजना जितनी जल्दी कार्यान्वित की जा सके, उतना ही श्रेयस्कर होगा।

मेले में लोक-गीतों का संग्रह भी किया गया था। आकाशवाणी जयपुर का दल भी पहुँचा था, जिन्होंने पूंगी पर गानेवाले बाँबियों, शरीर पर तेरह स्थानों पर झाँझे बाँध कर टनकारा बजाती हुई तेरह तालियाँ और मुक्त कण्ठ से माँड गाने वालियों के स्वरों के रेकार्ड तैयार किए। राजस्थान के प्रसिद्ध कलाकार वर्मा की पार्टी ने "हमारा गाँव" नाटक का भी प्रदर्शन किया। पर अनुभव ऐसा रहा कि यात्री इस सबमें रुचि नहीं ले रहे थे। अतएव यदि उन्हीं की पार्टियों द्वारा लोक-नृत्य, लोक-गीतों का आयोजन किया जावे तो सम्भवतः अधिक रोचक हो सकें। इस सम्बन्ध में भील नृत्य, सुमेरपुर विकास खण्ड क्षेत्र के लोगों के नृत्य और डीग में होने वाले "रसिया" का सुझाव अनुपयुक्त न होगा।

अन्तिम दिन का दृश्य और भी दर्शनीय रहा। 'बाबा तेरी जय बोलेंगे,' 'छोटे मोटे सब बोलेंगे,' 'बाबा तेरी जय बोलेंगे,' के नारे लगाते हुए, हाथों में झंडे लिए हुए, बीकानेर से पैदल यात्रा करके आते हुए और मन्दिर की दौड़ पर कौन पहले बाबा के दर्शन करता है की होड़ में दौड़ते हुए, अनायास ही किसी रेसकोर्स की याद आ जाती थी। यह मेला जातीय एकता का एकमात्र उदाहरण है। यहाँ न ब्राह्मण, शूद्र का भेदभाव है न हिन्दू मुसलमान का। नीच-ऊँच का कोई भेद-भाव नहीं है। यहाँ आकर तो सब एक ही बाबा के रंग में मस्त हो जाते हैं और ऐसे मस्त कि दूसरा रंग चढ़ता ही नहीं।

★

सामुदायिक विकास कार्यक्रम के चार वर्ष—[पृष्ठ ५ का शेषांश]

इस समय हैदराबाद के प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण भी ले रहे हैं।

इन्दोनेशिया और ईरान ने अपने यहाँ भी ऐसा ही कार्यक्रम चालू करने के बारे में सलाह देने के लिए सामुदायिक योजना प्रशासन के प्रधान तथा सचिव को अपने यहां आमंत्रित किया है।

दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस कार्यक्रम को काफी बढ़ाया जायगा। १९६१ तक सारे देश को राष्ट्रीय विस्तार सेवा का लाभ पहुंचने लगेगा और कम से कम ४० प्रतिशत राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्डों को सामुदायिक विकास खण्डों में परिवर्तित कर दिया जायगा। इस कार्यक्रम को देश के कोने-कोने तक फैलाने के लिए दूसरी योजना में २०० करोड़ रु. की व्यवस्था की गई है, ताकि देहातों में रहने वाले ७ करोड़ परिवार इस में हिस्सा ले सकें और लाभ उठा सकें।

समाजवादी समाज की रचना के अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के उद्देश्य से देश के नेता इस कार्यक्रम को कितना महत्व-पूर्ण समझते हैं, यह इसी बात से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने हाल में सामुदायिक योजना प्रशासन को एक पूरे केन्द्रीय मंत्रालय का रूप दे दिया है।

भारत के बच्चे

मेरी क्लबवाला जादव

भारत के बच्चे ! कौन ऐसा व्यक्ति है जिसका हृदय भारत के गाँवों में दिखाई देनेवाले चमकते हुए चेहरों को देखकर खिल न उठता हो । परन्तु हम इन बच्चों के लिए क्या कर रहे हैं ? उनकी शिक्षा और उनके भविष्य के लिए हमने क्या इन्तज़ाम किया है ? यह एक ऐसी समस्या है जिस पर राष्ट्र को अच्छी तरह से ध्यान देना चाहिए । दूसरे देशों में, जहाँ बच्चों की संख्या अधिक नहीं है और जहाँ बच्चों की जन्म-संख्या भी इतनी अधिक नहीं है, बच्चों का अत्यधिक ध्यान रखा जाता है । वहाँ अनाथ बालकों के लिए या उन बालकों के लिए जिनके माता-पिता ने उन्हें छोड़ दिया है या उनकी देखभाल करने योग्य नहीं हैं, ऐसी सरकारी और गैरसरकारी संस्थाएँ हैं जो उनकी रक्षा करती हैं और उनके विकास में सहायक होती हैं । उन देशों में ऐसे बालकों को बदचलनी और शोषण से बचाने के लिए कानून बनाए गए हैं । बुरे लोगों के ऐसे बालकों को गोद लेने के रास्ते में भी कानून रुकावट डालता है । परन्तु हमारे देश में लाखों ऐसे अभागे बालक हैं जिन्हें देखने वाला कोई नहीं है । इनमें से हज़ारों अपने गाँवों को छोड़कर शहरों में आ जाते हैं । शहरी जीवन से वे अनभिज्ञ होते हैं, फिर भी रोटी की तलाश में वे शहरों में आ निकलते हैं । जब उन्हें रोटी का कोई सहारा नहीं मिलता, तो वे चोरी करते हैं या भीख माँगना शुरु कर देते हैं । कुछ बेचारे घरेलू नौकर बन जाते हैं । कुछ बुरे लोग इन बालकों को शराब के नाजायज़ धन्धे में लगाते हैं।

देश के कई देहाती क्षेत्रों में बच्चों के कल्याण के लिए जो काम हुआ है, वह प्रशंसनीय है । मैंने मद्रास, भोपाल, ग्वालियर, मध्यप्रदेश और सौराष्ट्र में कई योजना-क्षेत्रों का दौरा किया है । वहाँ के गाँवों के बच्चों की पोशाक साफ-सुथरी थी और वे नियमानुसार स्कूल जाया करते थे । कुछ बच्चों को मैंने अपने स्कूलों की इमारतों में विस्तार के काम में लगे देखा । कुछ गाँवों के बच्चों के अपने क्लब और पार्लियामेंट हैं जिनमें उनको आवश्यक नेतृत्व मिलता है और जहाँ वे अपने में नेतृत्व की भावना पैदा कर सकते हैं । इनमें वे सफाई की समस्या पर विचार करते हैं, और गाँववालों की बुरी आदतें दूर करने के तरीके सोचते हैं । बालकों के दल गाँव की सड़कों और गलियों की सफाई करते हैं और गाँववालों को सड़क के नियम समझाते हैं । बेसिक स्कूलों की मदद से उनमें सहकारिता घर कर रही है ।

हमारे गाँवों में देहाती खेलों, गानों और संस्कृति का प्रचार करके उन्हें लोकप्रिय बनाने की कोशिश की जाए । गाँवों के लिए चलते-फिरते स्कूल खोले जाएँ । ज़रूरी नहीं कि स्कूल इमारतों में ही लगें—क्लासें बड़े-बड़े पेड़ों की छाया में भी लग सकती हैं । हमारे देश में ऐसे सायेदार पेड़ों की कमी नहीं । देश में अध्यापकों की कमी है—विशेषकर गाँवों में पढ़ाने वालों की । बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ उनके वंशानुगत धंधे की भी शिक्षा दी जाए ताकि ज़रूरत पड़ने पर वे भी पारिवारिक आय में अपना योग दे सकें ।

अमेरिका में बच्चों के लिए 4-एच क्लब हैं । मैसूर राज्य के कुछ हिस्सों में ऐसे ही क्लब शुरू किए गए हैं । क्लब के नाम में आने वाले चार "एच" हैं—हैड (मस्तिष्क), हार्ट (हृदय), हैंड्स (बाहुबल) और हैल्थ (स्वास्थ्य) । लड़के-लड़कियों की खेती, गृह-विज्ञान आदि में रुचि पैदा करने की कोशिश की जाती है, लड़कियों को मुर्गियाँ पालने, खाना पकाने, कपड़े सीने और बच्चों की देख-भाल करने की भी शिक्षा दी जाती है । उनको ट्रेनिंग दी जाती है, ट्रेनिंग के बाद वे अपना मन-पसन्द काम कर सकते हैं । उनकी बनी हुई चीज़ें देहाती मेलों में दिखाई जाती हैं और उन पर नकद पुरस्कार भी दिए जाते हैं । मैंने ऐसे लड़कों को देखा है जिनको उनकी गायों पर पुरस्कार मिला है और उस पुरस्कार की रकम से उन्होंने और गायें खरीदीं और इस प्रकार उनके दूध, मक्खन और क्रीम की क्वालिटी में सुधार हुआ है ।

स्काउटिंग को गाँवों की आवश्यकतानुसार सुधार करके, बच्चों में लोकप्रिय बनाया जाए । इससे बच्चों में निःस्वार्थ सेवाभावना और कर्त्तव्यपरायणता उत्पन्न होती है । इससे बच्चों में भाईचारे और मिलजुल कर काम करने की भावना पैदा होती है । इससे बच्चों को प्रकृति, पक्षियों, वृक्षों, ऋतुओं, फसलों आदि के बारे में आवश्यक ज्ञान भी प्राप्त होता है ।

शहरों में अनाथ आश्रम और बाल अपराधियों के लिए आश्रम खोले जाते हैं । इन आश्रमों में भरती होने वाले अधिकतर बच्चे गाँवों के होते हैं, जो गाँवों से भाग कर शहरों में आ जाते हैं । इसलिए ऐसे आश्रम शहरों में होने की बजाय

नेहरू जी का
बाल-प्रेम

गाँवों में होने चाहिएँ और हर आश्रम का अपना एक फारम हो। यह वातावरण उन बालकों के लिए नया नहीं होगा और इसमें वे पूरी तरह पनप सकेंगे। बाल अपराधियों को सुधारने के लिए गाँवों से बढ़कर अच्छी जगह दूसरी कोई नहीं है।

गाँवों में बड़ी उम्र के लड़कों को टेक्नीकल और व्यावसायिक प्रशिक्षण देने की सुविधाओं का नितान्त अभाव है। श्रम मन्त्रालय ने कई ऐसी योजनाएँ शुरू की हैं जिनके अन्तर्गत हरिजनों और अनुसूचित जाति और जनजातियों के बच्चों को टैक्नीकल प्रशिक्षण और छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। हमारे गाँवों में ऐसे ट्रेनिंग स्कूल और खोले जाएँ।

आज के युग में दृश्य शिक्षा का बहुत महत्व है। यह बहुत लाभदायक है और इसका प्रचार गाँवों में भी किया जाना चाहिए। बच्चों के लिए पुस्तकालय खोले जाएँ जिनमें स्थानीय भाषाओं की पुस्तकें हों। चलते-फिरते पुस्तकालयों का प्रयोग भी किया जाए। बच्चे इन पुस्तकालयों में इकट्ठे होकर बैठ सकते हैं और इस तरह उन्हें बहुत कुछ सीखने का मौका मिलता है। अब भी बहुत कम ग्रामवासी इस बात को जानते हैं कि दुनिया में क्या हो रहा है। यह भी एक दुखदायी सत्य है कि आम चुनावों तक कुछ गाँवों में लोगों को यह भी नहीं पता था कि हम आज़ाद हो चुके हैं और राष्ट्रीय सरकार के अधीन हैं। गाँवों में सामान्य ज्ञान पर भाषण दिए जाएँ। यह काम समाज शिक्षा संगठनकर्त्ता बखूबी कर सकते हैं।

हमारे ग्रामवासियों की भावना धीरे-धीरे बदल रही है लेकिन यह परिवर्तन तेज़ रफ्तार से होना चाहिए।

★

भारत

(नवम्बर १९५६)

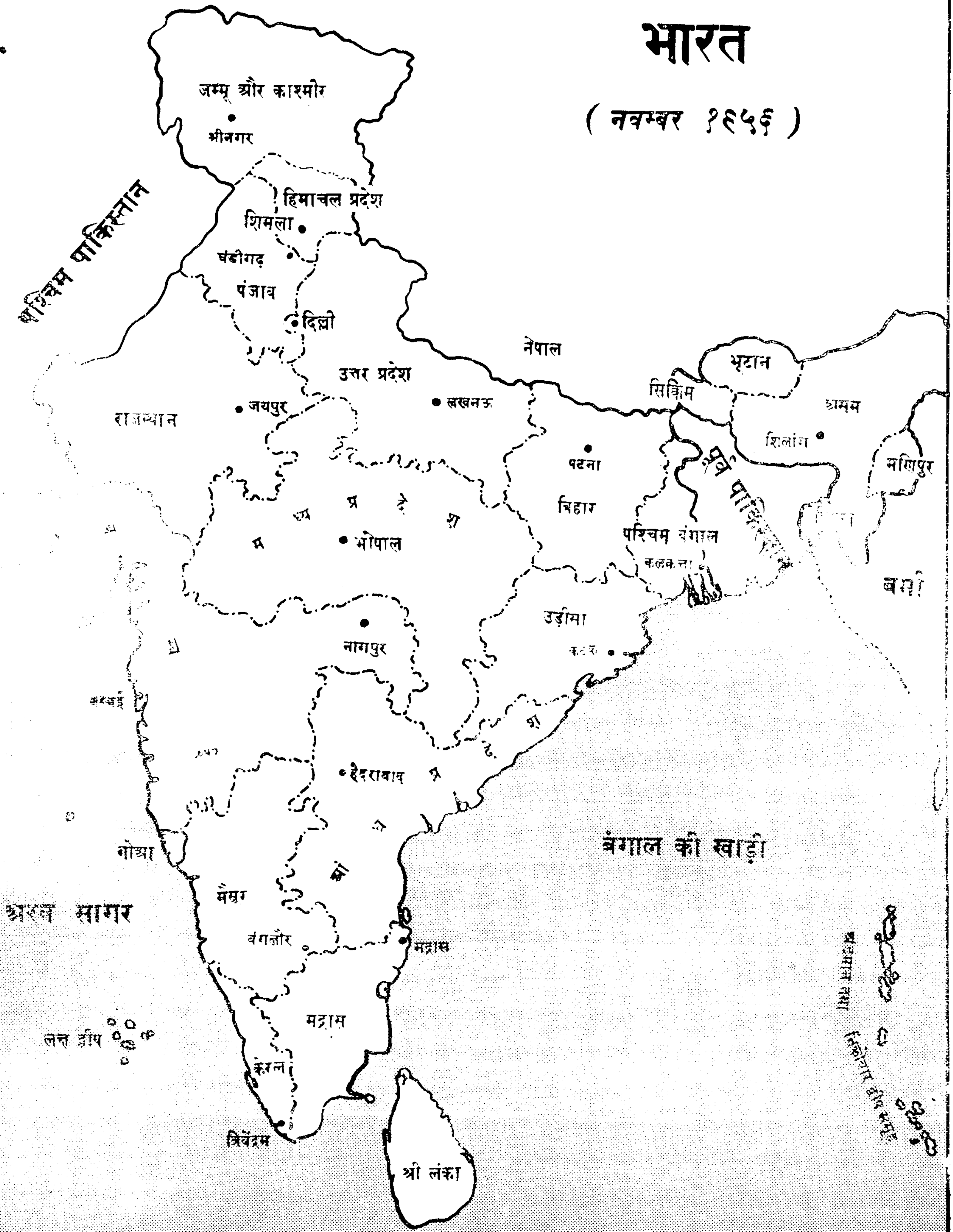

राज्य पुनर्गठन अधिनियम १९५६ और बिहार-पश्चिम बंगाल (क्षेत्र हस्तांतरण) अधिनियम १९५६ के अनुसार भारत के राज्य और क्षेत्र

	राज्य	क्षेत्रफल (वर्गमीलों में)	जनसंख्या **
१.	बम्बई	१९०,९१९	४८,२६५,१२०
२.	मध्य प्रदेश	१७१,२०१	२६,०९५,६८०
३.	राजस्थान	१३२,०७८	१५,९४६,७३१
४.	उत्तर प्रदेश	११३,४०९	६३,२१५,७४२
५.	आंध्र प्रदेश	१०५,९६२	३१,२५९,८१५
६.	जम्मू और कश्मीर	९२,७८०	४,४००,०००
७.	असम	८५,०१२	९,०४३,७०७
८.	मैसूर	७४,३४७	१९,४०१,६१२
९.	बिहार*	६७,३००	३८,८२७,५१७
१०.	उड़ीसा	६०,१३६	१४,६४५,९४६
११.	मद्रास	५०,११०	२९,९७४,९३६
१२.	पंजाब	४७,४५६	१६,१३४,८९०
१३.	पश्चिम बंगाल*	३३,८०९	२६,२५८,६४७
१४.	केरल	१५,०३५	१३,५४९,११८
		१,२३९,५५४	३५७,०१९,४६१
	क्षेत्र		
१.	हिमाचल प्रदेश	१०,९०४	१,१०९,४६६
२.	मणिपुर	८,६२८	५७७,६३५
३.	त्रिपुरा	४,०३२	६३९,०२९
४.	अंदमान और निकोबार द्वीपसमूह	३,२१५	३०,९७१
५.	दिल्ली	५७८	१,७४४,०७२
६.	लक्षद्वीप, मिनिकाय और अमिनदिवी द्वीपसमूह	१०	२१,०३५
		२७,३६७	४,१२२,२०८
	योग	१,२६६,९२१	३६१,१४१,६६९

**१९५१ की जनगणना के अनुसार

*(लगभग)

ग्राम सेवक तेरे अनेक नाम !

ग्राम सेवक को किन-किन बातों का प्रशिक्षण मिलता है, यह बेचारे ग्रामीण क्या जानें ! उनके बारे में तो यह है कि उन्होंने जैसा देखा वैसा कहना आरम्भ कर दिया । बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं जो ग्राम सेवक को 'ग्राम सेवक' कह कर पुकारते हैं ।

ग्राम सेवक ग्रामीणों की हर सेवा करने को तत्पर रहता है । ग्राम सेवक किसी पाठशाला में जाता है और बच्चों को कुछ खेल या अन्य बातें बताता है तो उसे बच्चे 'गुरु जी' कहने लगते हैं । बच्चों को सुन कर बड़े आदमी भी मास्टर या गुरु जी कहना आरम्भ कर देते हैं । रामायण या भजन में ग्रामीणों के साथ जब गाने लगता है तो ग्राम सेवक 'राम सेवक' बन जाता है । जब रासायनिक खाद का वितरण करता है तो 'खातू मुंशी' के नाम से पुकारा जाता है । मवेशियों को टीका लगाया या उनकी मरहम पट्टी की तो 'डाक्टर साहब' या 'कंपौडर साहब' बन गया । अगर किसी की बाड़ी या खेत में कूड़े-कचरे से खाद का गड्ढा भरवाया तो 'घूर साहब' (घूर = कचरा) कहलाने लगे । गाँव में नया कुँआ या सड़क बनवाई तो 'ग्राम सुधार साहब' की उपाधि मिल गई । ग्रामीणों की सभा बुलाई नहीं कि 'पंचाईत साहब' बन गए ।

विकास खण्डों में हमें अनेक नामों से पुकारा जाता है । जैसे—

१. ग्राम सेवक
२. राम सेवक
३. खातू मुंशी
४. डाक्टर साहब
५. कंपौडर साहब
६. गुरु जी (मास्टर)
७. घूर साहब
८. ग्राम सुधार साहब
९. पंचाईत साहब
१०. जमादार (कृषि जमादार)

एम० एम० फडस,
ग्राम सेवक,
बैकुण्ठपुर विकास खण्ड,
जिला सरगुजा
(मध्य प्रदेश)

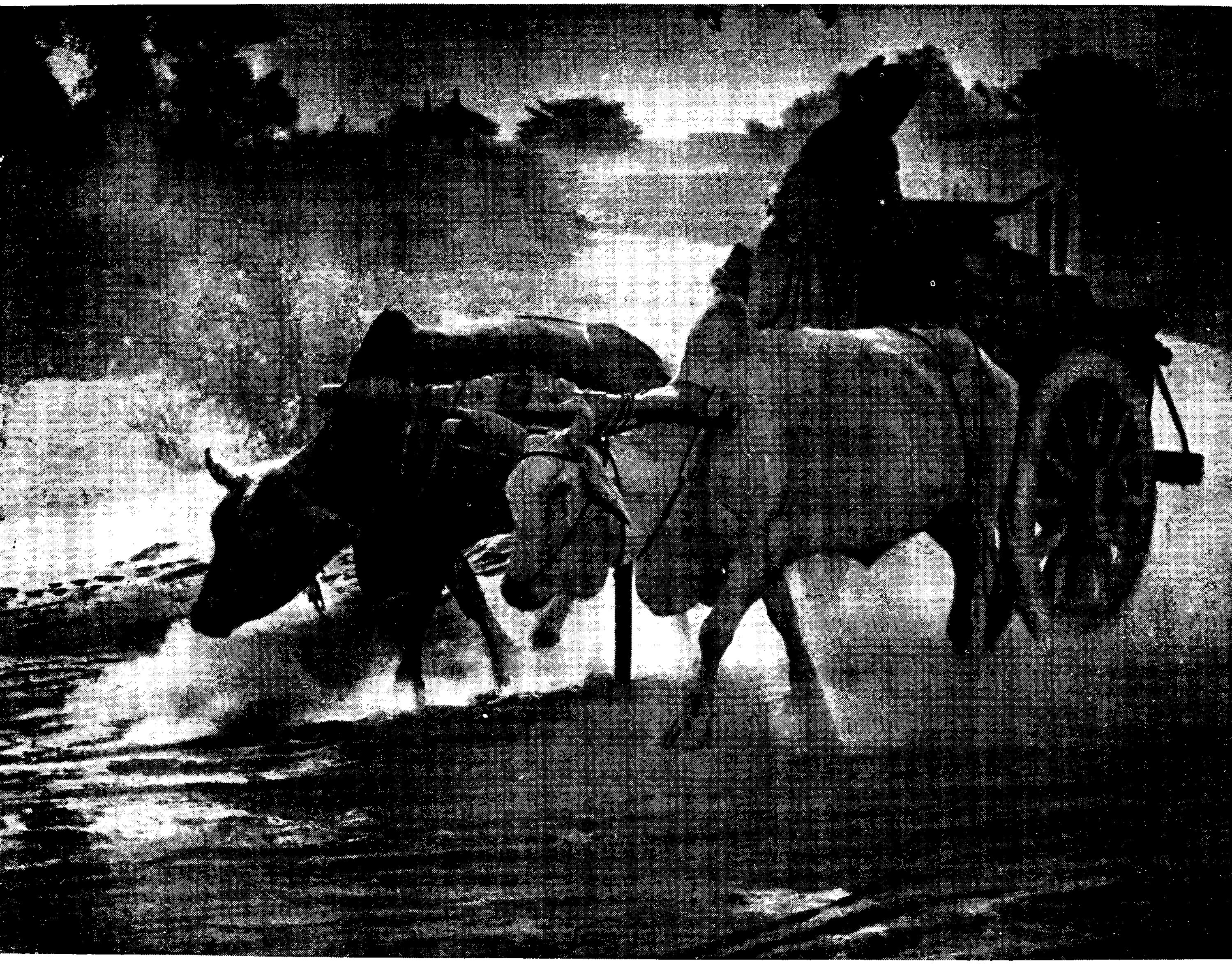

भोर की बेला

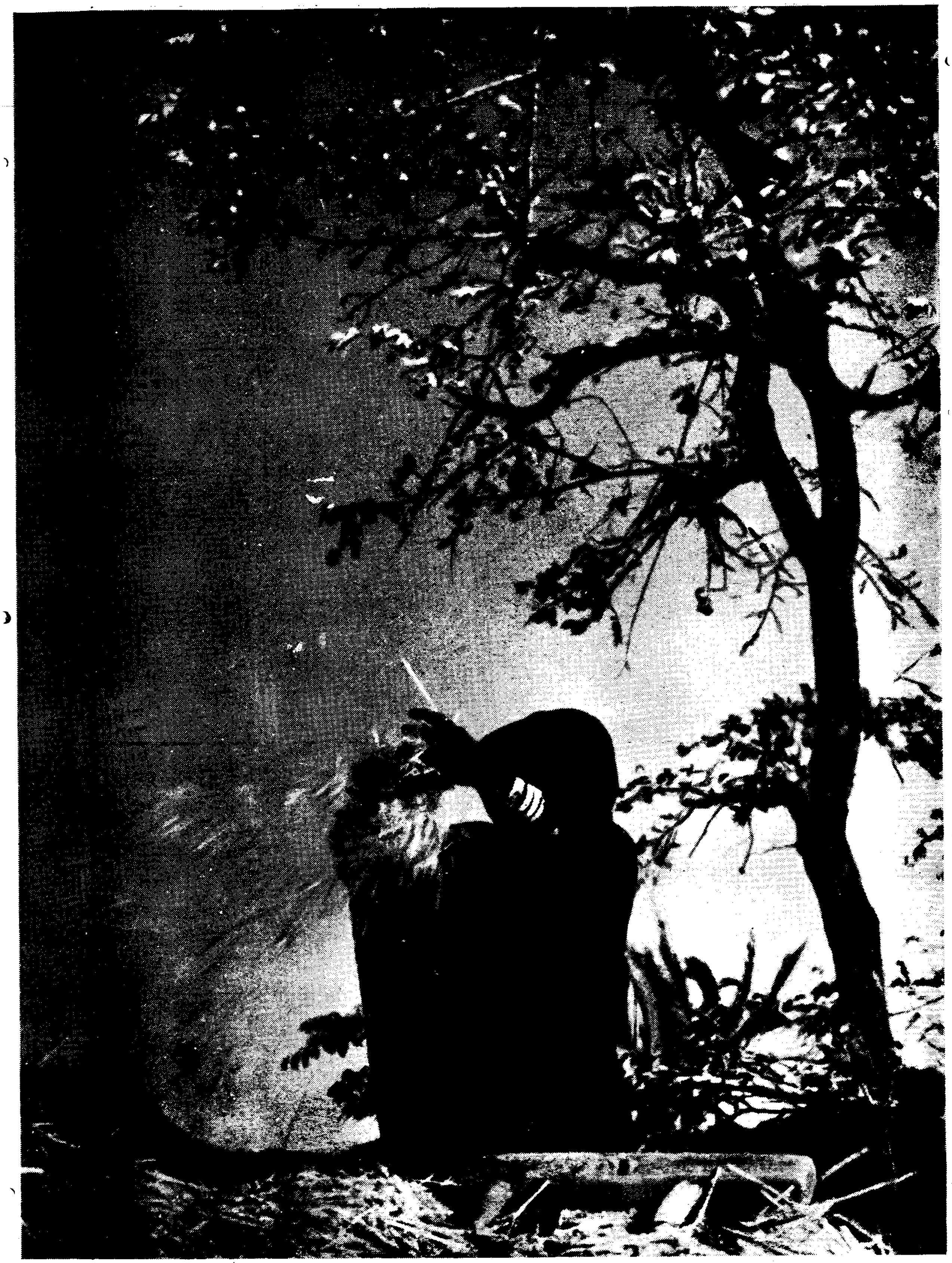

प्रतीक्षा

ज़मीन में जल की खोज

सूर्यनारायण व्यास

ज़मीन में जल खोजने के अनेक प्रकार हैं। वृक्षों के द्वारा जल की गहराई और जलाशय-शिरा देखने के तरीके महान् वैज्ञानिक वराह मिहिर ने बतलाए हैं। उसी प्रकार यह भी सूचित किया है कि जंगल और अनूप देश (मालव का निमाड़ प्रदेश) में जहाँ पैर रखने से ज़मीन दबती हुई दिखाई दे, वहाँ डेढ़ पुरुष नीचे जल रहता है। और जहाँ कीड़े ज़्यादा निकलते हुए दिखलाई दें, तथा उन के रहने का स्थान-बाँबी आदि न हो वहाँ भी डेढ़ पुरुष के नीचे जल मिलता है। और जिस स्थान में सारी भूमि गर्म मालूम दे, और उसी में एकाध जगह ठंडी मालूम हो वहाँ ३ पुरुष पर जल रहता है।

इन्द्रधनुष, मछली, या दीमक की बाँबी दिखलाई देने पर चार हाथ के नीचे ही पानी प्राप्त हो जाता है। जहाँ दीमक की अनेक बाँबी हों, उनमें जो बाँबी सब से ऊपर उठी हुई हो, उसके नीचे भी चार हाथ पर ही जल रहता है। और जहाँ खेती जमकर सूख जाए, या जमे ही नहीं, वहाँ भी उतने ही नीचे पानी मिल जाता है। बड़, पीपल और गूलर के पेड़ इकठ्ठे लगे हों तो समझिए तीन हाथ नीचे पानी बहता है। और खाली बड़-पीपल के इकट्ठे रहने पर भी यही हाल पानी का होता है। पर यहाँ उत्तर की ओर बहने वाली जल-शिरा रहती है। महर्षि मनु जी ने भी ज़मीन में जल खोजने की कुछ विधियाँ बतलाई हैं। उनके मतानुसार जिस ज़मीन में वृक्ष, गाछ और बेल चिकनाई लिए हों, जिनके पत्तों में छेद न हो, वहाँ तीन पुरुष नीचे जल होता है। स्थल-कमल, गोखरू, खश, कुल, गंड (शर) काँस, कुशा, नलिका, नल आदि घास हो, खजूर, जामुन, बेंत, अर्जुन के वृक्ष हों, और गाछ तया बेलें ऐसी हों जिनमें दूध निकलता हो, अथवा छत्री, हस्तिकर्णी, नागकेसर, कमल, कदम्ब, नक्त माल, सिंधुवार, बहेड़ा, और मदयन्तिका, जहाँ हो, वहाँ भी तीन पुरुष नीचे जल रहता है। जहाँ एक पर्वत पर दूसरा पर्वत हो, वहाँ ऊपर के पर्वत के तले में तीन पुरुष नीचे जल रहता है। मूंज, काँस, या कुशा जिस ज़मीन पर हों, और नीली रेत वाली ज़मीन हो, वहाँ जल मीठा होता है। काली मिट्टी की ज़मीन में सुस्वादु जल होता है। तांबे के रंग की मिट्टी रेत मिली हुई हो, उसमें कसैला जल मिलता है। कपिल-पीले रंग की ज़मीन में खारा जल मिलता है। पांडु रंग की ज़मीन में नमक के स्वाद वाला जल होता है। नीले रंग की ज़मीन में मीठा जल रहता है। शाक, अश्वकर्ण, अर्जुन, शीशम, बिल्वपत्र, सर्ज, श्रीपर्णी, अरीठा, शीशम के वृक्ष जहाँ छेद वाले पत्तों से युक्त हों और बेलें भी छेद वाले पत्तों की हों, रूखी हों, वहाँ जल निकट नहीं मिल पाता। जो ज़मीन सूर्य, आग, राख, ऊँट, या गधे के रंगवाली हो, वहाँ भी जल नहीं मिल पाता। यदि ज़मीन लाल रंग की हो, करील के पेड़ भी लाल अंकुरों वाले हों और उन पेड़ों से दूध निकलता हो, वहाँ पत्थरों के नीचे पानी होता है। वैदूर्य मणि, मूंग और मेघ के रंग के समान जो शिलाएँ काली हों, अथवा पके हुए गूलर के समान रंग हो, और जिस शिला को तोड़ने से अंजन की तरह गहरे काले रंग की या कपिल रंग की शिरा निकले, उसके निकट बहुत-सा जल होता है। जो शिला कबूतर, शहद, घी, या अलसी के रंग की, अथवा सोमवल्ली के रंग की हो, वहाँ भी बहुत सा जल रहता है। तांबे की रंग, या रंग-बिरंगे छींटे जिस पत्थर-शिला पर हों, पीली या नीली या लाल रंग की हो, सूर्य या आग की तरह हो, वहाँ जल का अभाव होता है। चन्द्र की चाँदनी, स्फटिक, मोती, सोना, इन्द्रनीलमणि के समान रंग की शिला हो, सिंगरफ के समान बहुत लाल रंग की हो, या बहुत काली हो, चमकदार हो, हरताल की तरह पीले रंग की हो, वह शुभ है। जल वहाँ होता है। जिस ज़मीन में ऐसे रंग की शिलाएं हों वहाँ अनावृष्टि नहीं होती।

जहाँ पानी खोजते हुए पत्थर की शिलाएँ अधिक हों, उनके तोड़ने में कठिनाई हो तो वहाँ ढाक और तेंदू की लकड़ी रखकर आग लगा दे, वह गर्मी से लाल हो जावे तब उनपर चूने की कली से मिला जल छिटका जावे तो वे टूट जाएँगी। इसी प्रकार महुवे की लकड़ी की राख को जल में मिलाकर औटा लेवे, उसके शर का खार मिला दे, और आग से तपाई हुई शिला पर छिटक दे (सात बार) वह शिला टूट जाती है। तीसरी रीति यह है कि खूब तपाई हुई शिला पर छांछ, कांजी, शराब, कुलथी,

[शेष पृष्ठ ३२ पर]

श्रमदान मेला

रामप्रकाश श्रीवास्तव

२९ जनवरी १९५६ का दिन ग्राम सिंधवारी के इतिहास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दिन था, जब गाँव के सभी लोग उत्साह और उमंग में भरे, अपनी-अपनी गाड़ियों को सजा कर अपने ग्राम की सड़क पर मुरम बिछाने चल दिए थे। आगे-आगे लाउड-स्पीकर पर राष्ट्र निर्माण के गीत बज रहे थे और पीछे लोग उत्साह तथा ग्राम विकास की भावना से ओत-प्रोत अपनी-अपनी गाड़ियाँ आगे ले जाने का प्रयत्न कर रहे थे। सारे दिन यही होड़ चलती रही, धूल से आसमान पीला हो गया था और सन्ध्या की लाली किसानों के हृदय में प्रेम का रूप धारण कर विलीन होती जा रही थी। फावड़े चल रहे थे, आसमान की लाली मुरम के रूप में धरती पर उतर आई थी। सवेरे जिस व्रत को लेकर वे अपने घरों से निकले थे वह पूरा हो चुका था। मुख्य सड़क से ग्राम तक की सड़क पर मुरम बिछ चुकी थी। किसानों के अंग-प्रत्यंग हर्षोल्लास से फड़क रहे थे। अन्त में अपने ग्राम नेता का आदेश पा वे सब अपने-अपने घरों की ओर चले गए और फिर सारी रात चौपाल पर मनोरंजन केन्द्र के सामने नाच-गान चलता रहा। परन्तु उस सब के बीच भी उनको कल की वह रात याद आ रही थी जब वे सब चौपाल पर उस महान कार्य का विरोध कर रहे थे जो उन्होंने आज पूरा कर लिया था।

कल रात विकास-योजना अधिकारी दौरा करते हुए अचानक ही उस ग्राम से गुज़र रहे थे। रात अधिक हो चुकी थी परन्तु फिर भी उनका मन न माना और वह चौपाल पर जा पहुँचे। सब लोग घर जा चुके थे केवल श्री मुहम्मद और श्री रामदास बैठे चिलम पी रहे थे। सामने विकास-योजना अधिकारी को देखकर उन्होंने राम-राम की। विकास-योजना अधिकारी वहीं बैठ गए। जो लोग चौपाल से जा चुके थे मोटर की आवाज सुन के वे भी घरों से बाहर निकल आए। बातचीत चलने लगी, बात ही बात में सड़क की भी चर्चा चली। गाँववाले कहने लगे हमने श्रमदान से सड़क बना दी है, अब सरकार को उसे पक्का करवाना चाहिए। विकास-योजना अधिकारी सुनते रहे। बाद में उन्होंने प्रत्येक विषय को लेकर बताया कि हम लोग ही सरकार हैं, यह हमारा ही काम है और इसे हमें ही पूरा करना चाहिए।

परन्तु लोग काम करने को तैयार न थे। काम न करने का दोष वे एक दूसरे के सिर मढ़ने लगे। हर व्यक्ति कहता कि मैं काम करने को तैयार हूँ परन्तु कोई और नहीं आता इस कारण मैं अकेला क्या करूँ? विकास-योजना अधिकारी ने एक नई रीति से काम लिया। उन्होंने ग्राम सेवक से एक कागज लेकर एक तरफ से नाम लिखने के लिए कहा। हर आदमी कहता--"हाँ, मैं तैयार हूँ।" और ग्राम सेवक झट उस व्यक्ति का नाम लिख लेता। होते-होते वहाँ पर सभी व्यक्तियों ने अपने नाम लिखा दिए। उन्होंने तय किया कि वे कल प्रातःकाल एक श्रमदान मेला लगावेंगे जिसमें सब लोग अपनी-अपनी गाड़ियाँ लेकर आवेंगे और वहाँ से तीन मील दूर झड़िया ग्राम की पहाड़ी से मुरम लाकर अपनी सड़क पर बिछावेंगे। विकास-योजना अधिकारी ने मेले में प्रदर्शनी, लाउड-स्पीकर आदि भेजने का वचन दिया और वह प्रसन्नतापूर्वक वापस लौट गए। रात को १ बजे वह सीधे मेरे मकान पर आए। उन्होंने मुझे उस मीटिंग व मेले के बारे में बताया तथा मुझ को प्रातःकाल वहाँ जाने की आज्ञा दी। विकास-योजना अधिकारी के जाने के पश्चात मैं जाकर लेट गया परन्तु मुझे नींद न आई क्योंकि मेरे मस्तिष्क में कल के मेले की झांकियाँ घूम रही थीं।

प्रातःकाल ७ बजे ही मैं प्रदर्शनी का सारा सामान--लाउड-स्पीकर और कैमरा आदि लेकर सिंधवारी जा पहुँचा। मैं समझता था कि लोग मुझे अस्पताल के सामने वाले मैदान में गाड़ियाँ लिए मिलेंगे परन्तु वहाँ किसी का नाम-निशान तक न था। मैं गाँव के मुखिया के घर पर गया परन्तु वह भी अपने खेत पर चले गए थे। मैंने गाँव में चक्कर लगाया परन्तु लोग अपने-अपने काम में लगे हुए दिखाई दिए, मानो उन्हें कल की बात का कोई ध्यान ही न हो। मैं एक दो घरों के भीतर भी गया और लोगों से मेले के बारे में बात की परन्तु फिर वही पुराना उत्तर सुनने को मिला--"साब कोऊ नई गाओ सो हमउ नई गए।" मेरा धैर्य टूटने को था। मैंने समझा मेला नहीं होगा। परन्तु इतने में ही मुझे एक दूसरी युक्ति सूझी। मैंने अपने साथी ग्राम सेवक से लाउड-स्पीकर पर रेकार्ड बजाने के लिए कहा। गाना बजते ही कुछ लोग मेरे पास आ गए। मैंने उनसे मेले के बारे में न कह कर यह कहा--"मैं कुछ गाड़ियों के

[शेष पृष्ठ २९ पर]

स्त्रियों और बच्चों को सुखी बनाने का प्रयास

होशंगाबाद से १६ मील दूर दौलरिया गाँव की ग्राम सेविका स्नेहलता वागरे ने पहले दिन अपनी डायरी में यह ब्यौरा लिखा था—

"आज मैंने बाबूलाल लुहार के आसपास के मकानों के ३० बच्चों को जमा किया। कुछ बच्चों की माताएँ भी आईं। अनेक बच्चे मैले-कुचैले दीख पड़े। उनके वस्त्र गन्दे थे। माताओं से मैंने बच्चों को साफ़-सुथरा रखने के लिए कहा और उन्हें बच्चों को साफ़ रखना, उनके बाल सँवारना आदि बताया। इसके बाद स्त्रियाँ और अधिक संख्या में आईं। मैंने उन्हें प्रारम्भिक योजना की बातें बताईं और बच्चों को बाल सभा में भेजने के लिए कहा। इसके लिए कुछ स्त्रियाँ राज़ी हुईं और कुछ स्त्रियों ने कहा कि बच्चों को साफ़ रखने से क्या लाभ; बच्चे तो दिन भर बाहर खेलते हैं; फिर गन्दे हो जाते हैं। कुछ स्त्रियों ने कहा कि यदि वे बच्चों को बाल सभा में भेज देंगी तो छोटे बच्चों की कौन देखभाल करेगा? मैंने जवाब दिया कि बच्चों के साथ उनके छोटे भाई बहन भी बाल सभा में भेजने चाहिएँ। बच्चे वहाँ साफ़ रहना सीखेंगे और माताएँ इस काम से छुट्टी पा जाएँगी।

मोलपुरा गाँव म बच्चों का एक बाग़

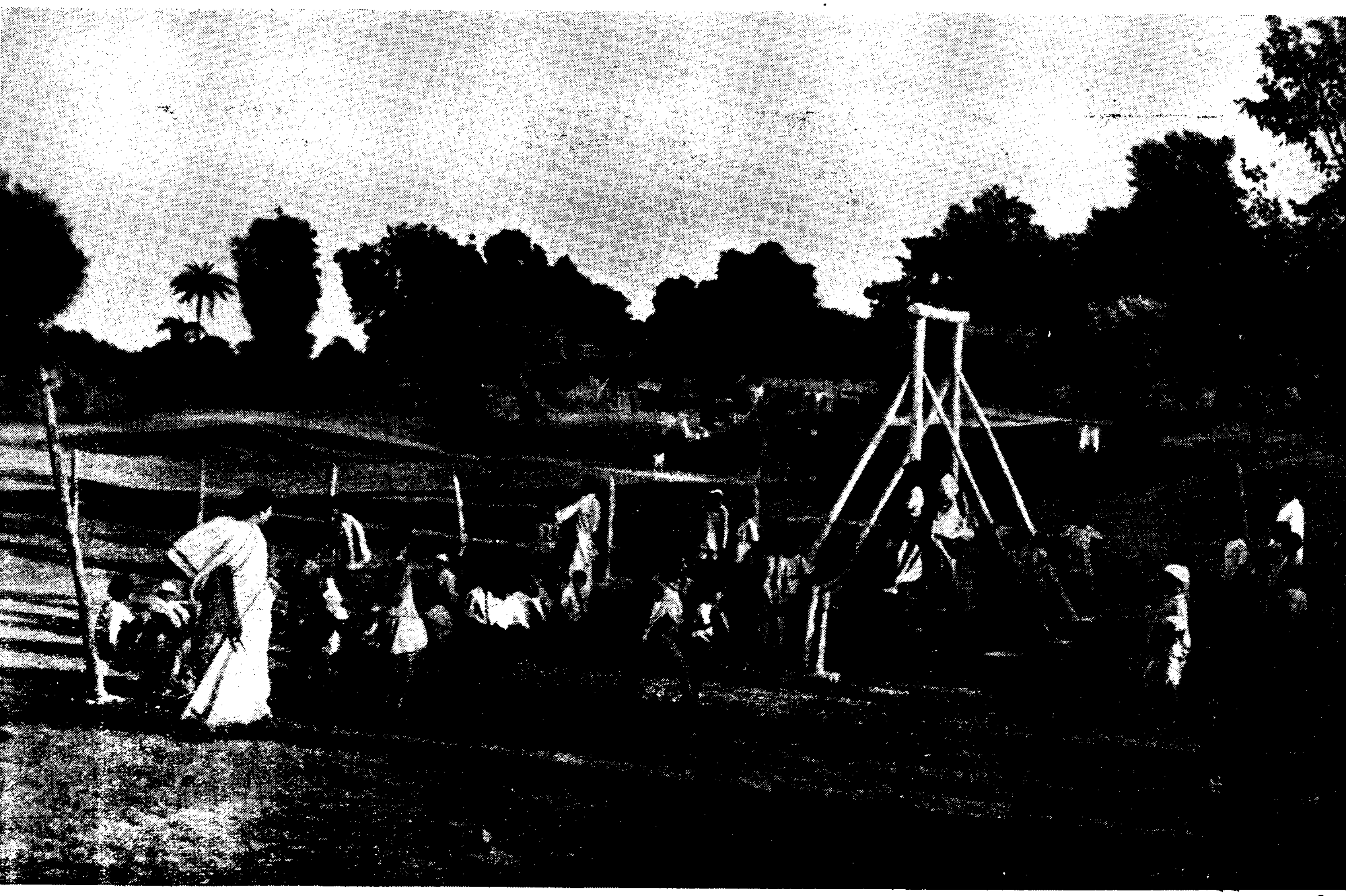

मैंने महिलाओं को बताया कि बाल सभा में बच्चों को और भी अनेक काम सिखाए जाएँगे । इसके बाद सिलाई और बुनाई के बारे में बातचीत हुई । मैंने उन्हें बताया कि वे अपने बच्चे के कपड़ों की सिलाई कर के पैसे बचा सकती हैं । इस पर कुछ महिलाएँ सिलाई और बुनाई सीखने को राज़ी हुईं ।

यह बात पिछले वर्ष नवम्बर की है, जब होशंगाबाद के पास के अनेक गाँवों में सामुदायिक खण्डों के अन्तर्गत स्त्रियों और बच्चों की भलाई का कार्यक्रम शुरू किया गया था ।

आज दोलरिया गाँव की काया पलट हो गई है । सिलाई बुनाई, दस्तकारी के काम, बच्चों के पार्क, स्वास्थ्य और सफ़ाई आदि के अनेक कार्यक्रम चालू हैं । गाँव की स्त्रियों के लिए महिला समाज, रामायण और कीर्तन मंडली, लड़कियों के पढ़ाई का प्रबन्ध आदि अनेक काम-काज जारी हैं । महिला समाज ने चंदा करके सोने की मशीन भी मंगा ली है, इसे गाँव की स्त्रियाँ काम में ला सकती हैं ।

महिलाओं ने अपन श्रमदान से महिला समाज केन्द्र के लिए एक चबूतरा और झोंपड़ी तैयार की है । अब गाँव का वातावरण भी बदल गया है । तभी तो सरपंच ठाकुर भोलासिंह ने कहा था—"धन्य है वह दिन जब ग्राम सेविका हमारे गाँव में आई । अब तक गाँवों में अच्छा काम हुआ है । हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों का जीवन सुखी हो ।"

इसी प्रकार नीमसादिआ, जसलपुर, सवालखेर आदि गाँवों को प्रगति उल्लेखनीय है । तीन वर्ष पहले मालीखेरी गाँव में जब हैज़ा फैला तो उस समय वहाँ ग्राम सेबक ने बड़ा सराहनीय काम किया । इसी कारण ग्राम सेवक पर गाँववाले पक्का भरोसा रखने लगे । पिछले वर्ष जब ग्राम सेविका ने यहाँ योजना का काम शुरू किया, तो ग्रामवासियों का सहयोग मिलना स्वाभाविक ही था । अब इस गाँव की हालत भी दोलरिया से कम अच्छी नहीं है ।

इन योजनाओं को काम शुरू करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । पर्दे का रिवाज और जातियों में ऊँच-नीच का भेद, दो बड़ी बाधाएँ थीं । परन्तु धीरे-धीरे ये बाधाएँ दूर होती गईं । महिला मंडलों में सभी जातियों

प्रौढ़ स्त्रियों की कक्षा

अकोला गाँव में प्राइमरी स्कूल के छात्रों द्वारा रामायण का पाठ

को स्त्रियाँ शामिल होती हैं । हरिजनों को भी कोई रुकावट नहीं रही है । नए बने कुओं का हरिजन आदि सभी उपयोग करते हैं ।

पिछले वर्ष शिमला में विकास आयुक्तों का सम्मेलन हुआ था । इसमें सिफारिश की गई थी कि सामुदायिक योजना-क्षेत्रों में स्त्रियों और बच्चों को भलाई के लिए प्रारम्भिक योजनाएँ शुरू की जाएँ । यह सुझाव पिछले वर्ष अगस्त में सब राज्य सरकारों के पास भेजा गया । सबसे पहले इस पर मध्य प्रदेश के विकास आयुक्त ने अमल किया । इस प्रकार प्रारंभिक योजनाएं होशंगाबाद सामुदायिक योजना-क्षेत्र के दो खण्डों में शुरू की गईं ।

प्रारम्भिक योजना को अमल में लाने के लिए एक समाज शिक्षा संगठनकर्त्ता और दस ग्राम सेविकाओं के प्रबन्ध का सुझाव दिया गया । हर ग्राम सेविका का कार्यक्षेत्र तीन गाँवों में रखा गया । ग्राम सेविका का पहले गाँव में ६ मास, दूसरे गाँव में ३ मास और तीसरे गाँव में ३ मास रहना आवश्यक समझा गया । इसके बाद ग्राम सेविकाओं का चुनाव किया गया ।

अभी तक इन योजनाओं की प्रगति संतोषजनक रही है। अन्य राज्यों के सामुदायिक योजना खंडों में भी ऐसी ही प्रारम्भिक योजनाएँ शुरू करने का विचार किया जा रहा है । आन्ध्र में तो दो ऐसी योजनाएँ चालू भी की जा चुकी हैं।

★

विकास योजना सांभर के तीन वर्ष

जोबनेर राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्ड का उद्घाटन २ अक्तूबर, १९५३ को किया गया था। यह राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्ड १ अप्रैल, १९५५ को सामुदायिक विकास खण्ड में परिवर्तित कर दिया गया। इस खण्ड में फुलेरा तहसील का उत्तर-पश्चिमी भाग लिया गया है। समस्त क्षेत्र में ११९ गाँव हैं जिनकी जनसंख्या ९९,४०० है तथा समस्त खण्ड ३४५ वर्गमील में है। कुल जनसंख्या में से ३९,१४४ कस्बों की है तथा बाकी ६०,२५६ ठेठ ग्रामीण है। ग्रामीण जनसंख्या में से ३४,२३३ सीधा कृषि का कार्य करती है; बाकी लोग लोहार, बढ़ई, बुनकर, रँगर इत्यादि का कार्य करते हैं।

कृषि

जब खण्ड शुरू हुआ, सम्पूर्ण ११९ ग्रामों का कृषि क्षेत्र १,२२,९६० एकड़ था जिसमें २३,९०९ एकड़ अर्थात् कुल क्षेत्र का १९.५ प्रतिशत सिंचित क्षेत्र था।

इस इलाके की मुख्य फसलों में गेहूँ, जौ एवं बाजरा, मोठ है, समस्त क्षेत्र में खण्ड खुलने से पूर्व किसी प्रकार का सुधरा बीज काम में नहीं लाया जाता था। खण्ड खुलने के उपरान्त कुल ६,७५७ मन सुधरा गेहूं का, १६० मन जौ का एवं ३३७ मन बाजरे का बीज काश्तकारों को बाँटा गया। इनके अलावा कई फ़सलें जैसे मूंगफली, कपास इत्यादि की भी लोगों को जानकारी करवाई गई। इस समय ५३२ एकड़ क्षेत्र से भी अधिक में सब्ज़ियाँ बोई जाने लगी हैं।

अच्छी प्रकार की खाद तैयार करने के लिए ६,७४१ खाद के खड्डे खुदवाए गए हैं। गोबर की खाद इलाके में उपलब्ध होती है परन्तु वह पर्याप्त नहीं है। अतः रासायनिक खादों की जानकारी हेतु भिन्न-भिन्न स्थानों पर ४३२ प्रदर्शन किए गए, तथा ६११ मन रासायनिक खाद बाँटी गई। कृषि के सुधार के लिए कृषि के नए प्रकार के औज़ारों को भी काम में लाना अनिवार्य था। गाँवों में अच्छे हलों के प्रदर्शन किए गए और २२ हल, ५ लैवेलर (ज़मीन को समतल करने के लिए) और कुट्टी की २६ मशीनें बाँटी जा चुकी हैं। १४० हलों के लिए काश्तकारों ने रकम जमा करा दी है। उपलब्ध होने पर उन्हें काश्तकारों में बाँट दिया जाएगा।

रेतीला इलाका होने के कारण गर्मियों में हवा से तथा बरसात में बारिश से बहुत टीले एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं तथा स्थान-स्थान पर टीले भी बन जाते हैं। इनकी रोक के लिए उचित स्थानों पर इमारती लकड़ी के ७,१४८ पेड़ लगाए गए हैं तथा इनके अलावा ३,०३६ फलदार पेड़ भी लगाए गए हैं।

सिंचाई

इस इलाके में सिंचाई का एकमात्र साधन कुएँ हैं। कुओं में भी पानी ६० फुट से ९० फुट की गहराई पर मिलता है। इसके अतिरिक्त कई स्थानों में तो १०० से १५० फुट की गहराई पर तथा कहीं तो पानी है ही नहीं। अब तक ८,८९,००० रुपए की तकावी बाँट कर २४७ नए कुएँ बनवाए गए हैं तथा ५०१ पुराने कुओं की मरम्मत कराई गई है। अगले दो वर्ष में १८५ नए कुएँ बनाने की तथा २८५ पुराने कुओं की मरम्मत कराने की योजना है।

सिंचाई के लिए कुओं पर रेहट लगाने की भी योजना है। परन्तु अधिकतर इलाके में पानी गहरा होने के कारण इस ओर बहुत कम प्रगति हुई है। सिंचाई की सुविधाओं के लिए ७ पम्पिंग सैट भी लगाए जा चुके हैं।

पशुपालन

इस क्षेत्र में अच्छी नस्ल के सांड उपलब्ध नहीं हैं। इस अभाव की पूर्ति के लिए फुलेरा में कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र खोलने की योजना है। यह केन्द्र अब चालू ही होने वाला है। इसके अतिरिक्त ४ सांड खरीद कर उन गाँवों में वितरित किए गए हैं जहाँ उनकी विशेष आवश्यकता है।

उन मौजूदा बछड़ों को जो अच्छी नस्ल के नहीं हैं, बैल बनाने के लिए बधिया कर दिया जाता है। अब तक ८२६ बछड़ों को बधिया कर दिया गया है। २९,५२८ मवेशियों के टीके लगाए गए हैं तथा ३,७०४ का अन्य बीमारियों के लिए इलाज किया गया है।

शिक्षा एवं समाज शिक्षा

किसी भी देश की आर्थिक प्रगति में शिक्षा एवं समाज शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व है। शिक्षा के क्षेत्र में हमारा देश दुनिया के अन्य देशों से पिछड़ा हुआ है। किसी भी देश में इतने अशिक्षित व्यक्ति नहीं मिलेंगे, जितने इस देश में हैं। अतः देहातों में अधिक प्राथमिक शालाएँ खोलने पर ज़ोर दिया गया।

खण्ड के प्रारम्भ में ३९ प्राथमिक शालाएँ, ६ माध्यमिक शालाएँ, ३ हाईस्कूल एवं २ कालेज थे। इस अवधि में ३६ प्राथमिक शालाएँ और खोली गई हैं तथा एक माध्यमिक शाला को हाईस्कूल बनाया गया है। इस प्रकार समस्त खण्ड में इस समय ८६ शिक्षण संस्थाएँ चल रही हैं। इनसे देहात में किसी भी ग्राम के बच्चों को स्कूल के लिए १॥ मील की दूरी से ज्यादा नहीं जाना पड़ता। खण्ड अवधि में २७ नए स्कूल बनाए गए, ३ की मरम्मत कराई गई तथा कई भवन इस समय बन रहे हैं। खण्ड शुरू होने से पहले यहाँ पर २० प्रतिशत बच्चे स्कूल जाया करते थे किन्तु अब ३० प्रतिशत जाने लगे हैं।

बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ उन लोगों को भी शिक्षित करना बड़ा अनिवार्य था जो लोग किन्हीं कारणों से अपने बचपन में नहीं पढ़ सके। इसके लिए स्थान-स्थान पर प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले गए और प्रौढ़ों को अक्षर ज्ञान के साथ-साथ जीवनोपयोगी शिक्षा दी गई। २,२०० व्यक्तियों को इन प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में साक्षर किया गया। समाज शिक्षा कार्यों के लिए प्रत्येक गाँव में विकास मण्डल कायम किए गए। ४७ विद्यार्थी संघ कायम किए गए, ३८ तरुण किसान मण्डल कायम किए गए। २८ मनोरंजन केन्द्र कायम किए गए। २२ पुस्तकालय खोले गए। जनता की ६५७ सभाएँ बुलाई गईं, जिनमें एक लाख व्यक्तियों ने भाग लिया तथा ५१ रेडियो लगाए गए। विकास कार्यों से अवगत कराने के लिए प्रशिक्षण शिविर लगाया गया जिसमें ७ दिन तक २२२ व्यक्तियों को रखा गया और उसमें ग्रामीण नेता, अध्यापक, पटवारी आदि सम्मिलित हुए।

यातायात

इस इलाके में सिर्फ ४ मील लम्बी पक्की सड़क है। अधिकतर रेतीला भाग होने के कारण सड़क बनाना कठिन है। इस अवधि में केवल ३०५ फलाँग लम्बी सड़क बनाई जा सकी है। अधिकतर रास्ते कच्चे होने के कारण इन्हीं में सुधार हो सकता था। अतः १,०६६ मील लम्बे कच्चे रास्तों को चौड़ा किया गया और समतल बनाया गया।

ग्रामोद्योग

ग्रामोद्योगों का यहां विशेष महत्व है। अतः स्थान-स्थान पर आदर्श टैनैरी बनाई गई हैं, तथा जोबनेर में एक जूते बनाने तथा बनाने की शिक्षा देने का केन्द्र खोला गया है, जहाँ पर इस समय १४ आदमी प्रशिक्षित किए जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त दो सिलाई के केन्द्र खोले गए हैं जिनमें ६८ स्त्रियाँ सिलाई का कार्य सीख रही हैं। एक साबुन बनाने का केन्द्र भी खोला गया है जहाँ पर ४१ ग्रामीणों को साबुन बनाना सिखाया गया है।

स्वास्थ्य और सफाई

विकास खण्ड की ओर से एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रेनवाल में खोला गया है। इसके अतिरिक्त अन्य बीमारियों के लिए ग्राम सेवक भी दवाइयाँ देते हैं। अब तक १,३८८ व्यक्तियों के टीके लगाए गए हैं और १३,३४० का साधारण इलाज किया गया है।

किशनगढ़ रेनवाल में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और जोबनेर में एक अस्पताल जल्दी ही खुलने वाला है, जिसके लिए भवन दान में मिल गया है।

किशनगढ़ रेनवाल में तथा सांभर में जच्चाखाने के लिए भवन बनकर तैयार हो रहे हैं। भवन तैयार होते ही वहाँ जच्चाखाने खोल दिए जाएँगे।

रेगिस्तानी इलाका होने के कारण यहाँ पानी की कमी है और पीने का पानी भी उपलब्ध होने में कठिनाई होती है। खण्ड खुलने से पूर्व कई ग्राम ऐसे थे जिनमें गर्मी में करीब ३-४ मील से पानी लाना पड़ता था। खण्ड के उपरान्त इस बात पर अधिक ज़ोर दिया गया कि लोगों को स्वच्छ पानी मिले। इसके लिए ५५ नए आदर्श कुएँ बनाए गए तथा ६५ पुराने कुओं को आदर्श कुएँ बनाया गया।

कुओं के पानी रखने के लिए व मवेशियों की पानी पीने की समस्या हल करने के लिए १४० तलाइयाँ गहरी कराई गईं।

सहकारिता

ग्राम विकास की जड़ सहकारिता है। अतः समितियाँ कायम की गईं। इस समय ६२ सहकारी समितियाँ कार्य कर रही हैं।

★

परिवर्तन

चन्द्रकान्ती मिश्र

कमला—नमस्ते, राधा बहन !

राधा—आओ, आओ कमला, रामू के बाबू जी दफ़्तर चले गए हैं, और इधर मैं भी सब काम-धन्धों से अवकाश पा सोच ही रही थी कि ३-४ दिनों से जाने क्यों कमला नहीं आई ?

कमला—क्या बताऊँ बहन अपने घर में सब से बड़ी लड़की होने के कारण पिता जी और भाई-बहनों में ही व्यस्त रहना पड़ता है । जब से माता जी का स्वर्ग-वास हुआ है, मुझे ही घर के सब काम-काज निप-टाने पड़ते हैं । रो-धो कर पिछले साल मैट्रिक पास कर लिया था और अब पिता जी आगे नहीं पढ़ने देते । कहते हैं, पराया धन है, साल दो साल में हाथ पीले कर दूँ, तब मुझे चैन मिलेगा ।

राधा—इस विषय पर तो मेरे पिता जी के विचार बहुत स्वतन्त्र हैं । जब मैंने मैट्रिक पास किया तो बड़े प्रसन्न हुए और झट से कालेज में नाम लिखा दिया पर क्या बताऊँ कमला, कालेज में मुश्किल से दो-तीन माह पढ़ने पाई थी कि अचानक मेरी शादी कर दी गई, और अब तो रामू भी गोद में खेलने लगा है । इसी बीच रामू के बाबू जी की बदली हो गई । सास-ससुर सब छूट गए । इधर किराए का मकान और ऊपर से किसी का आसरा नहीं, जो घड़ी दो घड़ी रामू को ही बहलाता रहे । इसके विपरीत इनी-गिनी तनख्वाह घर में आती है । घर में क्या आती है, रास्ते में ही तेली, तमोली, परचूनी व किराने वाले की थैली में जमा हो जाती है । बचा-खुचा पैसा सास-ससुर को भेज देते हैं । महीना राम-राम करके कटता है ।

कमला—बहन ! घर-घर चूल्हे मटियाले हैं । हमारे पिता जी क्या कम मेहनत करते हैं ? साल दो साल में पेन्शन होने वाली है, पर बाल-बच्चों की चिन्ता ने कमर झुका दी है । उनके बाल पक गए हैं और रात में कुछ दिखाई भी नहीं देता । बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, कपड़े-लत्ते, खाना-पीना सब ही तो है उनके आसरे । इस अवस्था में पिता जी की जी तोड़ मेहनत मुझ से तो नहीं देखी जाती, बहन ! मैंने आज उनसे कहा—'पिता जी, पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत अनेक नए-नए कार्य देश के उत्थान एवं कल्याण के निमित्त आरम्भ हो चुके हैं और भविष्य में होंगे भी, अतः क्यों न, मैं भी अपने देश की इस योजना में हाथ बटाऊँ ? इससे हमारी आर्थिक स्थिति में सुधार तो होगा ही पर साथ ही साथ मुझे देश-सेवा का अवसर भी मिलेगा ।' बहन, मेरा इतना कहना था कि पिता जी एकदम बिगड़ पड़े । कहने लगे—'अभी तो मैं ज़िन्दा हूँ, क्या आवश्यकता है तुम्हें नौकरी करने की । आराम से खाओ और मौज करो ।' मुझ से न रहा गया बहन, मैंने भी जवाब दिया—'जीवन केवल पेट भरने और मौज करने के लिए नहीं है, पिता जी ! घर में बेकार बैठ रहने से तो यही अच्छा है कि जन्मभूमि के प्रति कुछ कर्तव्य भी निभाऊँ । मेरी एक मां [illegible] गई तो क्या हुआ, इस विस्तृत देश में [illegible] आज हमें पुकार रही हैं । वर्तमान [illegible] से अनभिज्ञ, अशिक्षित, गांव [illegible] में रह कर सन्तोष करनेवाली [illegible] और [illegible] हमारी ओर आशा भरी [illegible] । काश ! हमारी तरह वे भी शिक्षित [illegible] पातीं । पिता जी आज [illegible] ने उनके धैर्य, भोलेपन और [illegible] है । परिणामस्वरूप गांव-गांव में पंचवर्षीय योजना सफलतापूर्वक चल रही है । ग्रामीण और पिछड़ी हुई जन-जातियों का कल्याण ही योजना का मुख्य उद्देश्य है, इसे आप भली भांति जानते हैं और यह भी कि प्रथम पंचवर्षीय योजना की समाप्ति पर आप अपने कार्यालय के कार्य में कितने व्यस्त रहते थे । आप ही ने तो बड़े मनोयोग से पूरी योजना का सूत्र एवं उद्देश्य मुझे बताया था और आज जब कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना को सफल बनाने के लिए शिक्षित वर्ग पर एक नया उत्तरदायित्व आ गया है

तो आप मुझे सहयोग के लिए प्रोत्साहन न देकर निराश बना रहे हैं।'

राधा—कमला, तुमने तो मेरे कान खोल दिए। लगता है उनके (रामू के बाबू के) आने के पहले ही घर छोड़ कर चली जाऊँ और किसी सेवा समिति में अपना नाम लिखा लूँ। पर बहन, मुझे तो कोई पता-ठिकाना मालूम ही नहीं, कैसे और किस प्रकार मैं भी सरकार की नई-नई योजनाओं में हाथ बँटा सकती हूँ। मेरे घर का हाल तो तुमने पहले ही सुन लिया। मैंने भी रामू के बाबू जी से दो-चार बार कहा कि न हो तो मैं ही कहीं काम कर लूँ, पर अक्सर मेरी बात को टाल गए। बोले—'दफ्तरों में आदमी रहते हैं, बाहर जाना पड़ता है, गाँव-गाँव घूमना पड़ता है, कैसे तुम आदमियों के बीच रह कर काम कर सकोगी?'

कमला—राधा बहन, ये आदमी हैं जो औरतों को कमज़ोर बनाते हैं और आप बहादुर बनते हैं। कई दफ्तरों में लड़कियों की संख्या अधिक होती है तो क्या आदमी वहाँ से काम छोड़ देते हैं या वहाँ काम ही नहीं करते? यही कारण है कि आज देश में अनेक शिक्षित महिलाओं के होते हुए भी प्रत्येक कार्य-क्षेत्र में उनका अभाव है। कई बहनें ऐसी हैं जो नौकरी तो करना चाहती हैं पर अपना घर नहीं छोड़ना चाहतीं। इसी से आज हम पिछड़े हैं। अंग्रेज़ों को देखो हज़ारों मील का फासला तय करके अपना देश छोड़ कर विदेश में आए थे। उनके इसी अध्यवसाय और लगन ने उनके देश को उन्नति के उच्च शिखर पर बैठा दिया जो आज औद्योगिक क्षेत्र में हमारे लिए अनुकरणीय है। इस तुलना में हम कितने हीन हैं कि अपने देश में ही एक ज़िले से दूसरे ज़िले में जाने से हिचकते हैं।

राधा—कमला अब तो मैंने निश्चय कर लिया है कि उनके आते ही अवश्य उन्हें राज़ी कर लूँगी। मैंने जो कुछ पढ़ा-लिखा है धीरे-धीरे उसे भूलती जा रही हूँ। और नहीं पढ़ सकती तो कम से कम पिछला तो न भूलूँ।

कमला—मैंने भी दृढ़ निश्चय कर लिया है कि पिता जी के कार्य में कुछ तो मदद करूँ, हालाँकि वह यह सब नहीं चाहते। पर देश-सेवा और देश के कल्याण के लिए तो कदाचित उनके मुँह से 'न' नहीं निकल सकेगी। और हाँ, राधा बहन तुमने पूछा है कि कहाँ और किस प्रकार नौकरी के लिए आवेदन दिया जा सकता है?

राधा—हाँ, कमला मुझे तो मालूम ही नहीं कहाँ और किस विभाग में जगह खाली है?

कमला—मालूम होता है तुम अखबार नहीं पढ़तीं, बहन, और न ही अपने पड़ौस के प्रौढ़ शिक्षा स्कूल में ही कभी गई हो। विकास योजना के अन्तर्गत प्रत्येक तहसील में विकास योजना कार्यालय स्थापित किए गए हैं, जिनमें अनेक ग्राम सेविकाएं कार्य करती हैं। काम भी बड़ा आसान है। गाँव-गाँव में जाकर शिक्षा, स्वास्थ्य सफाई आदि का प्रचार करना तथा ग्रामीणों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए विभिन्न घरेलू और छोटे पैमाने के उद्योग शुरू करने के सुझाव देना। सुधरे हुए बीज और कृत्रिम खाद का उपयोग कर अधिक उत्पादन की प्रणाली समझाना। अन्य सुविधाएँ कार्यालय से प्राप्त होती हैं। यह सब स्थानीय प्रौढ़ शिक्षा स्कूल के पुस्तकालय की पुस्तकों के अध्ययन से मुझे ज्ञात हुआ है। राधा बहन, आप भी घंटे दो घंटे के लिए स्कूल आया कीजिए। निरक्षर महिलाएँ तो वहाँ आती ही हैं पर साक्षरों के लिए भी कोई मनाही नहीं है।

राधा—बहन तुमने तो मेरे मन में एक ज्योति जगा दी, जिसके मन में अपने देश एवं बहन भाइयों के प्रति सच्ची कर्त्तव्य भावना है, वह सुविधा और असुविधाओं का ध्यान नहीं करता।

कमला—अच्छा बहन, नमस्ते, अब चलूँ। बातों ही बातों में कितना समय बीत गया पता ही नहीं चला। पिता जी के आने का समय भी हो गया।

★

ग्राम पंचायतें और वन महोत्सव

माताबदल चौरासिया 'विशारद'

वृक्ष हमारे जीवन में कितना योग देते हैं, हमारे लिए कितने आवश्यक हैं, इस तथ्य को किसी विवेचना की आवश्यकता नहीं । यहाँ प्रश्न यह है कि वन महोत्सव के पुनीत पर्व में हमारी ग्राम पंचायतें क्या योगदान दे सकती हैं ?

हमारी ग्राम पंचायतों का अभी शैशव काल ही है । यों तो हमारी ग्राम पंचायतों की शृंखला अति प्राचीन है परन्तु पराधीनता के युग में ये ग्राम पंचायतें बिलकुल मृतप्रायः हो गई थीं और स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही इन्हें जीवनदान मिला है ।

वन महोत्सव एक पुनीत पर्व के समान है । इस पुनीत पर्व में आपने यदि एक भी वृक्ष लगाकर उसके पालन करने का व्रत ले लिया तो यह सच है कि अपने जीवन पर्यन्त आप उसके फल खाएँगे और उसके और लाभ उठाएँगे । यही नहीं बल्कि आपके बाद भी यह आपके नाम को अपने जीवन तक अमर रखेगा । इस प्रकार आप उस ऋण से जो प्रकृति एवं माता का आप पर है, उन्मुक्त हो जाएँगे । आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करने का यही मुख्य स्रोत होगा ।

पंचायत ऐसे अवसर पर अपने प्रति युवक को साथ लेकर एक सुदृढ संगठन बनाए और यह शपथ दिलवाए कि धरती माता के विशाल वक्षस्थल को जहाँ कहीं भी निरोपयोगी देखें वहीं वृक्ष लगाकर उसकी उपयोगिता बढ़ा देंगे । हम ऐसा ही करेंगे, हमारे जीवन का यही लक्ष्य है, यह पर्व है, यही त्यौहार है, यही व्रत है, ऐसा संगठन कर प्रत्येक सदस्य व्रत ले फिर देखें कि ग्राम पंचायत का यह अनोखा विचार कितना सफल होता है ।

ग्राम पंचायतों को चाहिए कि सर्व प्रथम एक बैठक बुला कर यह निश्चय करे कि हमारे अधिकार क्षेत्र में कहाँ और कितनी भूमि उपयोग में नहीं आती (२) हमारे गाँव में किस-किस प्रकार के वृक्ष सफलता के साथ लगाकर पाले जा सकते हैं ? (३) हमारे गाँव को आवश्यकता किस-किस जाति के पेड़ों से हल होगी ? (४) यदि हम अपने गाँव की आमदनी बढ़ाने के लिए वृक्ष लगाना चाहें तो निकट में या सुगमता के साथ उनकी पैदावार की खपत के क्या साधन हैं ? (५) गाँव में कैसी भूमि उपलब्ध है ?

वर्षा ऋतु ही इस कार्य के लिए सबसे उपयुक्त ऋतु है । पंचायत को चाहिए कि इस अवसर से सदा लाभ उठाए । इस अवसर पर पंचायतों का कर्तव्य हो जाता है कि अपने गाँव में कुछ चुने हुए व्यक्तियों को साथ लेकर गाँव की भूमि का व्यापक सर्वेक्षण करें, और एक बृहद योजना के साथ गाँव के भूस्वामियों को आदेश देती जाएँ कि आप अपनी इस खाली भूमि पर हमारी योजना के अनुसार इस चीज़ के वृक्ष लगाएँ ।

जो भूमि भूस्वामियों के अधिकार से बच रहती है और जिस पर गाँव पंचायत का ही अधिपत्य है उसकी व्यापक पड़ताल कर के देखें कि इसको किस प्रकार उपयोगी बना सकते हैं । यह तो सच ही है कि वृक्ष हमारे जीवन के बहुत ही आवश्यक अंग हैं और यह धरती की उपयोगिता बढ़ाने में बड़ा योग देते हैं । पंचायत के अधिकार वाली भूमि में वृक्षारोपन की दो सूरतें हैं । (१) सामुदायिक वन लगाना (२) व्यक्तियों को वृक्ष लगाने के लिए इस शर्त पर भूमि देना कि (१) फल फूल लगाने वाला खाएगा परन्तु पेड़ों के काटने का अधिकार उसको नहीं है । (२) सामुदायिक वन तैयार हो जाने पर लगाने वाले को आधा या तिहाई जैसी व्यवस्था तय हो जाए दिया जाएगा । इस बात का निश्चय लिखित प्रस्ताव द्वारा कर लेना चाहिए ।

यदि वन सामूहिक प्रयास द्वारा लगाए जाएँगे तो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शक्ति भर योग देना चाहिए । कर्तव्य किसी से कम नहीं है । इस सामूहिक वृक्षारोपण में श्रम करना महान पुण्य होगा । साथ ही व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति में योगदान देता हुआ गौरव प्राप्त करेगा ।

यों वृक्षों की कई श्रेणियाँ उनकी उपयोगिता के आधार पर बना ली गई हैं—जैसे फलदार, सायादार, ईंधन वाले आदि आदि परन्तु उनके उपकार अपार और अनन्त हैं । श्रेणी निर्धारित करना सूर्य को दीपक दिखाना है । क्या फलदार वृक्ष साया नहीं देता ? क्या साये वाले पेड़ सुगन्ध नहीं देते ?

गाँव के बाहर मन्द समीर प्रसारित करने और शीतल छाया देने वाले वृक्षों की विशेष प्रतिष्ठा रहती है । अतः इन बातों का विचार करते हुए गाँव में नीम, पीपल, पाकर, बरगद,

इमली, शहतूत, केला, शरीफा, मौलश्री, अशोक, गूलर, नींबू आदि विशेष उपयोगी होते हैं ।

गाँव के बाहर उपजाऊ भूमि पर आम, अमरूद, कटहल, नींबू, संतरा, चकोतरा, नारंगी, पपीता, केला, नाशपाती, बेर, आँवला, महुआ, जामुन, शरीफा, करौंदा आदि लगाना विशेष लाभकारी होता है ।

गाँव के बाहर दूर चरागाही स्थानों में बबूल, शीशम, गूलर, महुआ, ढाक, रीठा, रीवाँ, तुन, झाऊ आदि विशेष महत्व रखते हैं ।

ऊसर एवं कटाव को रोकनेवाली भूमि में ढाक, बबूल, चिलिल, झरबेरी, झाऊ, आदि बहुत ही लाभकारी हैं ।

ग्राम पंचायतों को सरकार के विभागों जैसे कृषि सहकारिता, पंचायत, विकास एवं नियोजन से पूरी-पूरी सहायता लेनी चाहिए; उनकी सेवाओं से लाभ उठाना ग्राम पंचायतों का प्रथम कर्तव्य है। सरकार के इन विभागों के कर्मचारी वृक्षारोपन में चतुर होते हैं । वे ग्राम पंचायत या व्यक्ति विशेष को सलाह देने व पेड़ों के पौधे, व बीज आदि उपलब्ध कराने और तार का घेरा डालने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उनसे सलाह लेकर वृक्षारोपण करना बहुत उपयोगी होगा ।

इस समय गाँवों में नए बाग लगाने से अधिक महत्व का कार्य पुराने बागों का सुधार करना है । क्योंकि पुराने बाग या तो पेड़ों से खाली हो गए हैं या जो पेड़ हैं भी वे फल नहीं देते । अतः ऐसे बागों में नए ढंग से पेड़ लगाना बहुत आवश्यक है, ऐसे बागों के लिए कृषि एवं अन्य विभागीय कर्मचारियों से सलाह लेकर सुधार किया जाए तो देश का बहुत उपकार होगा ।

सरकार ने यह भी योजना बनाई है कि जो ग्राम पंचायत या व्यक्ति विशेष अधिक से अधिक बाग या पेड़ लगाएगा उसे ज़िला, क्षेत्र एवं राज्य में पुरस्कार दिया जाएगा। इस प्रकार ऐसे काम में आम के आम और गुठलियों के दाम भी सुलभ हैं । अतः इस पुण्य अवसर से लाभ उठाने में शीघ्रता वांछनीय है ।

ग्राम पंचायत के क्षेत्र को वृक्षों से हरा-भरा कर देने में हमारा उतना ही कर्तव्य है जितना कि समस्त देश का कर्तव्य है । यदि ग्राम पंचायतों ने इस दिशा में शीघ्रता से कदम उठाया तो इसका यही अर्थ न होगा कि उनका क्षेत्र खुशहाल होगा बल्कि उनका भविष्य सदा के लिए गौरवमय हो जाएगा ।

★

श्रमदान मेला—[पृष्ठ २० का शेषांश]

फोटो लेना चाहता हूँ। परन्तु अब बिना लिए ही जाना पड़ेगा, क्योंकि कोई तैयार ही नहीं है।"

यह सुन कर कुछ लोग झट बोले—"साब हम तो तैयार हैं और दूसरे नहयां ।"

मैंने कहा—"अच्छा चलो तो हम तुम्हारे ही फोटो ले लें, और देखते-देखते वे लोग अपनी गाड़ियों को लेकर मैदान में आ गए । उनको गाड़ियाँ लेकर आते देख अन्य लोग भी जल्दी-जल्दी गाड़ियाँ तैयार करने लगे और थोड़ी ही देर में मैदान में लगभग चालीस-पचास गाड़ियाँ दिखाई देने लगीं । जब सब लोग एकत्रित हो गए तो वहाँ के ग्राम सेवक ने उन्हें 'श्रमदान मेले' के महत्व के बारे में बताया तथा अपनी-अपनी गाड़ियों पर पोस्टर्स आदि लगाने को कहा । उनकी समझ में बात बैठ गई और वे उमंग तथा उत्साह में भर कर अपनी गाड़ियों को ऐसे सजाने लगे मानों किसी बारात में जा रहे हों। मेरा हृदय प्रसन्नता से फूल रहा था और लाउड-स्पीकर की ध्वनि सारे वायुमंडल में गूंज रही थी।

सरकार द्वारा उस सड़क पर पुलिया बनाई जा चुकी है तथा निकट भविष्य में ही उसे पक्का बना दिया जाएगा ।

★

प्रगति के पथ पर

छोटी बचत का संदेश गाँव-गाँव में पहुँचाने की अपील

राजस्व तथा प्रतिरक्षा व्यय मंत्री, श्री अरुण चन्द्र गुह ने यह अपील की है कि स्त्रियों का बचत आन्दोलन गाँवों में भी चलाना चाहिए, जहाँ लोगों में बचत की आदत नहीं डाली गई है। श्री गुह स्त्रियों के बचत आन्दोलन सम्बन्धी केन्द्रीय सलाहकार समिति की छठी बैठक में भाषण कर रहे थे। उन्होंने कहा कि देश में विकास कार्यक्रमों पर खर्च बढ़ रहा है और उसके कारण गाँवों में लोगों की आमदनी भी बढ़ रही है। अब वहाँ छोटी बचत आन्दोलन में रुपया लगाने की आदत भी बढ़नी चाहिए।

उन्होंने बताया कि पहली पंचवर्षीय योजना के शुरू में कुल राष्ट्रीय आय के मुकाबले छोटी बचतों से जमा होने वाली रकम का औसत ४ प्रतिशत था, जो योजना के अन्त में बढ़ कर ७ प्रतिशत हो गया। दूसरी योजना में १० प्रतिशत का लक्ष्य रखा गया है। श्री गुह ने कहा कि ब्रिटेन, अमेरिका और रूस के क्रमशः १२, १५ और लगभग ३५ प्रतिशत औसत को देखते हुए यह अब भी कम है। श्री गुह ने इस बात पर ज़ोर दिया कि छोटी बचत का सन्देश पंचायतों, सामुदायिक योजनाओं, राष्ट्रीय विस्तार खण्डों तथा स्कूल-अध्यापकों के द्वारा गाँव-गाँव में पहुँचाना चाहिए।

ग्राम-आयोजन नितान्त आवश्यक है

"ग्राम-आयोजन को नगर-आयोजन से अधिक महत्व दिया जाना चाहिए" ये शब्द प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने शरद आयोजना गोष्ठी को दिए गए एक सन्देश में कहे। यह गोष्ठी भारत की नगर आयोजन संस्था के तत्वावधान में ८ अक्तूबर, १९५६ को चंडीगढ़ में हुई। श्री जवाहरलाल नेहरू ने बताया कि केवल ग्राम-आयोजन से ही भारत की ८० प्रतिशत जनसंख्या के आवास तथा रहन-सहन की स्थिति में सुधार हो सकता है।

अपने सन्देश में प्रधान मन्त्री ने कहा "यह आवश्यक है कि हम अपने नगरों का उचित आयोजन करें और विशाल इमारतें बनाएँ। किन्तु, इससे भी महत्वपूर्ण बात है ग्राम-आयोजन के बारे में सोचना। ऐसे आयोजन से ही हमारी सफलता आँकी जाएगी और हमारी ८० प्रतिशत जनसंख्या की आवास तथा रहन-सहन की स्थिति सुधरेगी।"

खेती-बाड़ी के सुधरे औज़ारों को लोकप्रिय बनाया जाए

कृषि इंजीनियरों तथा खेती-बाड़ी के औज़ार बनाने वालों का दूसरा सम्मेलन हाल ही में नई दिल्ली में हुआ। खेती-बाड़ी के औज़ारों के सर्वेक्षण का विस्तार करने तथा इन औज़ारों को लोकप्रिय बनाने के लिए राज्यों में सलाहकार समितियां बनाने के लिए, इस सम्मेलन ने सिफारिशें की हैं। सम्मेलन ने, कृषि-अनुसंधान-परिषद से, खेती-बाड़ी के प्रमुख औज़ारों की सूचियां राज्य सरकारों को भेजने को कहा है, जिससे राज्य सरकारें अपने क्षेत्रों के उपयुक्त औज़ारों का परीक्षण कर सकें और राष्ट्रीय विस्तार सेवाओं के ज़रिए उनका प्रचार कर सकें। किसानों के सामने खेती-बाड़ी के सुधरे औज़ारों का प्रदर्शन करने के लिए, ज़िलों में प्रशिक्षित कर्मचारी नियुक्त करने की भी सिफारिश की गई है। यंत्रों की सहायता से धान की खेती करने के सम्बन्ध में जो जानकारी संग्रह की जाएगी, उसकी जाँच करने के लिए सम्मेलन ने एक समिति भी बनाई।

सहकारी हाट-व्यवस्था की ट्रेनिंग

भारत सरकार ने द्वितीय पंचवर्षीय योजना की बची हुई अवधि में देश भर में १,६०८ सहकारी हाट-व्यवस्था समितियाँ खोलने का निश्चय किया है। प्रशिक्षार्थियों का पहला दल मेरठ के प्रादेशिक सहकारी ट्रेनिंग केन्द्र में अपना पाठ्यक्रम पूरा कर चुका है। यह दल उत्तर प्रदेश, पंजाब और हिमाचल प्रदेश में सहकारी हाट-व्यवस्था समितियों का संगठन करेगा।

मसूरी में हुए राज्यों के कृषि मंत्रियों के सम्मेलन में नई सहकारी हाट व्यवस्था समितियों के बढ़े हुए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ट्रेनिंग की सुविधाएँ बढ़ाने की सिफारिशें की गई। इस सिफारिश पर अमल करने के लिए केन्द्रीय सहकारी ट्रेनिंग समिति, पूना, राँची, मद्रास, मेरठ और इन्दौर में सहकारी ट्रेनिंग के ५ केन्द्रों में थोड़े समय के पाठ्यक्रम चलाने का प्रबन्ध कर रही है। राज्य सरकारों द्वारा सहकारी ऋण और हाट-व्यवस्था की समन्वित योजना के अधीन विभिन्न हाट-व्यवस्था समितियों के संगठन के लिए प्रशिक्षित व्यक्ति नियुक्त किए जाएँगे।

दस्तकारी सिखाने के नए केन्द्र

अखिल भारतीय दस्तकारी मण्डल शीघ्र ही फरीदाबाद में एक टोकरी बनाने का प्रारम्भिक प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्र खोलने वाला है। इस केन्द्र में १० प्रशिक्षणार्थियों को काम सिखाया जाएगा और उन्हें छात्रवृत्ति दी जाएगी। दस्तकारी मण्डल, बम्बई में खिलौने बनाने का एक प्रारम्भिक उत्पादन-केन्द्र भी खोलेगा। बम्बई में रंगाई और छपाई के दो और प्रशिक्षण-केन्द्र खुलेंगे। हरेक केन्द्र में १५ लोगों को काम सिखाया जाएगा। इसके अतिरिक्त लाख का सामान और खिलौने बनाने के लिए भी राज्य सरकार को अनुदान दिया गया है।

विस्थापितों को दरी बुनने का काम सिखाने के लिए पश्चिम बंगाल में भी एक प्रशिक्षण व उत्पादन केन्द्र खोला जाएगा। केन्द्र में ६० लोगों को काम सिखाया जाएगा। पश्चिम बंगाल में तीन और प्रशिक्षण केन्द्र खोलने की योजना मंजूर की गई है। एक केन्द्र में लाख का सामान और बाँस पर खुदाई करने का काम सिखाया जाएगा। दूसरे केन्द्र में घास-फूस तथा बेंत से कलात्मक और आम इस्तेमाल की चीजें बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। तीसरे केन्द्र में बटन बनाना सिखाया जाएगा। इसके अतिरिक्त बैशणवचक (मिदनापुर ज़िला, पश्चिम बंगाल) में सींग की सुन्दर वस्तुएं बनाने का एक केन्द्र भी खुलेगा। हाथी दाँत उद्योग के विकास के लिए भी राज्य सरकार को १०,००० रुपए का ऋण दिया गया है। राज्य सरकार को शोलापीठ उद्योग, चटाई उद्योग, घोंघा-सीप उद्योग आदि के लिए भी अनुदान दिया गया है।

जंगली जीवों की रक्षा

"जंगली जीवों की रक्षा का मतलब उन खूंखार जानवरों की रक्षा करना नहीं जो मनुष्य के साधारण कार्यों में बाधा पहुँचाते हैं। इसमें जंगली जीवों का नियंत्रण तथा उनका प्रबन्ध भी शामिल है" ये शब्द केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा. पंजाबराव देशमुख ने १ अक्तूबर को आकाशवाणी, दिल्ली से जंगली जीव-जन्तु सप्ताह का उद्घाटन करते हुए कहे। डा. देशमुख ने कहा—'आज अक्तूबर की पहली तारीख है। आज से ही जंगली जीव-जन्तु सप्ताह का प्रारम्भ है। जंगली प्राणियों की रक्षा के लिए बनाए गए मंडल ने इस काम के लिए अक्तूबर का पहला सप्ताह चुनकर ठीक ही किया है। इसी सप्ताह में अहिंसा के दूत महात्मा गान्धी का जन्म-दिन पड़ता है।"

मंत्री महोदय ने मानव और प्रकृति की अभिन्नता का उल्लेख करते हुए कहा कि किसी भी दृष्टि से क्यों न देखें, दोनों में अटूट एवं घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। प्रकृति का नाश करके मनुष्य अपना ही नाश करता है। अतः जंगली जीव-जन्तुओं की रक्षा, जिससे प्रकृति का सन्तुलन बना रहता है, उसके अपने जीवन के लिए भी आवश्यक है। यदि मृगराज सिंह, भयानक शेर, शानदार हाथी, सुन्दर हिरन, चहचहाने वाली बुलबुल और सुहावने मोर न हों तो मानव जीवन कैसा नीरस हो जाए।

मंत्री महोदय ने आगे कहा कि मेरा आप से यही अनुरोध है कि आप इसे समझें कि देश की सम्पत्ति बढ़ाने में जंगली प्राणियों का भी महत्वपूर्ण हाथ है। अतः बालकों में जंगली जीव-जन्तुओं के प्रति प्रेम उपजाना नितान्त आवश्यक है। इन निर्दोष, सुन्दर पशु-पक्षियों की अन्धाधुन्ध हत्या के विरुद्ध जनता में जागृति उत्पन्न करनी चाहिए। मंत्री महोदय ने कहा कि जंगली जीव-जन्तु-सप्ताह के साथ-साथ आज गान्धी-जयन्ती समारोह का भी प्रारम्भ है। आइए आज "हम बुद्ध और गान्धी के देश के निवासी अपने देश के बनों और उनमें रहने वाले मूक प्राणियों को अन्धाधुन्ध विनाश से बचाने की प्रतिज्ञा करें।" इस अवसर पर मैसूर के राजप्रमुख ने अपने सन्देश में कहा—"किसी ने सच कहा है कि जंगली जीव जन्तुओं पर परिस्थिति की अनुकूलता का जितना शीघ्र असर पड़ता है और प्रतिकूलता से जितनी जल्दी ये कष्ट पाते हैं उतना और कोई प्राणी नहीं। हमारी लापरवाही के कारण पिछले ६०-७० सालों में कुछ जंगली पशु-पक्षियों का तो बीजनाश ही हो गया है।"

राजप्रमुख ने जनता से अनुरोध किया है कि वह जंगली जीव-जन्तुओं की रक्षा के लिए हर तरह से सहयोग दे। शिकार आदि के कानून तोड़ने वालों की भर्त्सना की जाए और अधिकारियों और जंगली पशु-पक्षियों के प्रेमियों को इनकी रक्षा और संवर्धन की योजना बनानी चाहिए। अपील में राजप्रमुख ने कहा है कि हमारे देश में जंगली जानवर बड़ी तेजी से घट रहे हैं। उन्होंने केन्द्रीय जंगली पशु-पक्षी रक्षक मंडल का भी उल्लेख किया। इस मंडल की स्थापना १९५२ में हुई थी। पर उनके विचार में सबसे अधिक प्रभावशाली चीज़ जन-जागृति है। यह खुशी की बात है कि लोगों में इन पशु-पक्षियों के प्रति सहानुभूति पैदा हो रही है और लोग समझने लगे हैं कि देश के जीवन में इनका भी स्थान है। जनता को पशु-पक्षियों को राष्ट्रीय सम्पत्ति समझना चाहिए और इस बात का बराबर ख्याल करना चाहिए कि हमारी लापरवाही से ये जीव-जन्तु नष्ट न हो जाएँ।

★

ज़मीन में जल की खोज—[पृष्ठ १९ का शेषांश]

और बेर के फल को मिलाकर एक बर्तन में रख दे, सात रात तक पड़ा रहने दे, और बाद में थोड़ा-थोड़ा छिटकते जाए तो शिलाएँ टूट जाती हैं।

नीम के पत्ते, नीम की छाल, तिलों का नाल, अपामार्ग, तेंदू के फल, गिलोय, इनकी राख करके गोमूत्र से छान ले, फिर पत्थर को खूब गर्म करके इसको छः बार छिटकाता जावे तो शिलाएँ टूट जाती हैं।

इसी प्रकार पत्थर तोड़ने के औज़ारों के लिए भी विधान है कि यदि हुडू मेंढे के सींग को जलाकर उसकी स्याही, कबूतर, और चूहे की बीट के साथ पीसकर मिला ले, इन सब को आँक के दूध में डालकर लेप बना ले, और इसे औज़ारों पर लगावे, फिर तेल लगा कर टाकी को पत्थर पर तीखी कर ले। उसे शिला पर मारने से भी उसकी नोक नहीं टूटेगी। दूसरे केले के खार में छाछ मिला कर एक दिन रहने दे, फिर जिस लोहे में मिलाकर पान दी जावे, और उसे धार कर ले, तब पत्थर पर मारने से भी वह नहीं टूट सकता, न लोहे पर लगने से भी नरमाता नहीं। यदि कुएँ, या बावड़ी का जल स्वादिष्ट न हो, खारा हो, कसैला हो, तो उसमें अंजन (सुरमा) मौथा, खस, बड़ी तुरई, आँवला, कटक चूर्ण मिला कर पानी में डाल देने से जल का स्वाद उत्तम हो जाता है और सुपेय बन जाता है। इसके अन्य विधान भी हैं।

★

भारत की एकता का निर्माण

(सरदार वल्लभभाई पटेल)

भारत की एकता के निर्माता सरदार पटेल के २७ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाषणों का यह संग्रह हाल ही में प्रकाशित हुआ है।

१५ अगस्त १९४७ को जब भारत स्वाधीन हुआ, तब भारत में ९ प्रान्तों के अतिरिक्त ५८४ रियासतें थीं। इन ५८४ रियासतों में केवल हैदराबाद, काश्मीर और मैसूर यही ३ रियासतें ऐसी थीं, जो आकार और आबादी के लिहाज से पृथक् राज्यों का रूप धारण कर सकती थीं। अधिकांश रियासतें बहुत छोटी थीं और २०२ रियासतें तो ऐसी थीं, जिनका क्षेत्रफल १० वर्गमील से अधिक नहीं था। उस पर भी ये सब की सब रियासतें शासन की पृथक इकाइयाँ बनी हुई थीं।

भारत के प्रथम उपप्रधान मन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने दो वर्षों के भीतर ही सम्पूर्ण भारत को एक बना दिया। उक्त ५८४ रियासतों का ५,८८,००० वर्गमील क्षेत्रफल और १० करोड़ के लगभग आबादी इस अल्पकाल ही में भारत के आन्तरिक भाग बन गए। उसी तरह, जिस तरह के अन्य राज्य हैं। हैदराबाद, मैसूर और काश्मीर को पृथक-पृथक और अन्य कितनी ही रियासतों के संघ बनाकर उन्हें 'बी' श्रेणी के राज्य बना दिया गया। सैकड़ों छोटी-छोटी रियासतें आसपास के बड़े राज्यों में मिला दी गईं। परिणाम यह हुआ कि भारत भर में पूर्ण प्रजातन्त्र स्थापित हो गया और सन् १९५२ का निर्वाचन समूचे देश में बालिग मताधिकार के आधार पर समान रूप में हुआ।

इस नवीन भारत की एकता के निर्माण में सरदार पटेल के इन २७ भाषणों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। स्वाधीनता के पहले २॥ वर्षों की भारतीय समस्याओं पर इन भाषणों में जो प्रकाश डाला गया है, उसका महत्व ऐतिहासिक है। ये भाषण देश के लिए चिरकाल तक प्रकाशस्तम्भ का काम देते रहेंगे।

प्रचार के उद्देश्य से इस अत्यन्त महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक ग्रन्थ का मूल्य बहुत कम रक्खा गया है। पुस्तक में ३५० बड़े आकार के पृष्ठों के अतिरिक्त १६ पृष्ठ सरदार पटेल के सुन्दर चित्र और नवीन भारत का एक मानचित्र भी दिया गया है।

ग्रन्थ का मूल्य ५) रु० : डाक व्यय अलग।

पब्लिकेशन्स डिवीज़न,

मिनिस्ट्री ऑफ़ इन्फ़र्मेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंग, गवर्नमेंट ऑफ़ इण्डिया,
ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली—८

Regtd. No. D-28

उत्कृष्ट प्रकाशन

महात्मा गान्धी

महात्मा गान्धी की कहानी—चित्रों में

यह चित्रमय कहानी काल क्रम अनुसार है और महात्मा गान्धी के अलौकिक जीवन के महत्वपूर्ण अध्यायों में बँटी हुई है। यह आशा की जाती है कि इस समय तक उनके जीवन तथा कार्य-कलाप के सम्बन्ध में जो प्रचुर सामग्री एकत्र हुई है यह प्रकाशन उसका उपयुक्त चित्रमय पूरक प्रमाणित होगा।

सादा जिल्द १०) रु०
सिल्क जिल्द १५) रु०

स्वाधीनता और उसके बाद—
जवाहरलाल नेहरू के भाषण

प्रधान मंत्री नेहरू के १९४६ से १९४९ तक विशेष अवसरों पर दिए गए ६० महत्वपूर्ण भाषण। स्वाधीनता, महात्मा गांधी, साम्प्रदायिकता, काश्मीर, हैदराबाद, शिक्षा, उद्योग, भारत की वैदेशिक नीति, भारत और राष्ट्र मण्डल, भारत और विश्व, आदि विषयों पर। सभी दृष्टियों से संग्रहणीय और पठनीय ग्रन्थ। रु० ५)

भारत दर्शन

(चित्रों में)

भारत की कहानी दिग्दर्शित करने वाले विविध चित्रों का अनमोल संग्रह है। देश के निवासी, पशु, वनस्पति, प्राकृतिक रचना, आदि का विहंगावलोकन। भारतीय जीवन विचारधारा, परिस्थिति, प्राकृतिक दृश्य इत्यादि, विभिन्न पहलुओं का स्थलानुरूप समावेश। रु० ७॥)

भारतीय कला का सिंहावलोकन

मोहिन्जोदरो के समय से लेकर भारत के प्राचीन मध्ययुगीन तथा आधुनिक कला के ३७ रंगीन और १०० एक रंगीन चित्रों का संग्रह। रु० ६॥)

भारत की एकता का निर्माण

अगस्त १९४७ से दिसम्बर १९५० तक भारत के इतिहास के तेजस्वी काल में दिए गए सरदार वल्लभ भाई पटेल के ७७ महत्त्वपूर्ण भाषण जो स्वतन्त्र भारत के निर्माण का यथार्थ प्रमाण हैं, कई दुर्लभ चित्रों सहित। रु० ५)

पब्लिकेशन्स डिवीजन,

ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली—८

Printed at the Mufid-i-'Am Press, Delhi, and Published on behalf of Ministry of Community Development by the Publications Division Delhi-8.